राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई,उत्तरप्रदेश,बिहार,राजस्थान,मध्यप्रदेश,उतरांचल,उतराखंड,दिल्ली,हरियाणा में प्रसारीत

क्रांति समय
SURESH MAURYA
(Chief Editor)
M. 98791 41480
Working. off.: STPI-SURAT, GUJARAT-395023
(Software Technology Park of India, Surat.
www.krantisamay.com
www.krantisamay.in
krantisamay@gmail.com

सुरत-गुजरात,संस्करण शुक्रवार,१४ मई २०२१ वर्ष-४, अंक -११० पृष्ठ-०८ मूल्य-०१रुपये

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

गर्भावस्था के दौरान ले सकते हैं कोरोना का टीका, गर्भनाल को नुकसान नहीं

नई दिल्ली। गर्भावस्था के दौरान महिलाओं का कोविड-19 रोधी टीके की खुराक लेना सुरक्षित रहेगा और इससे गर्भनाल को नुकसान पहुंचने का कोई प्रमाण नहीं है। पत्रिका ऑब्सटेट्रिक्स एंड गायनेकोलॉजी में मंगलवार को प्रकाशित अपनी तरह के पहले अध्ययन में कहा गया कि इस तरह के कई लेख आए हैं कि गर्भावस्था में कोविड-19 टीका लेना सुरक्षित है। अमेरिका स्थित नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी के फेनबर्ग स्कूल ऑफ मेडिसिन के सहायक प्रोफेसर जेफ्री गोल्डस्टीन ने कहा कि गर्भनाल विमान में ब्लैक बॉक्स की तरह होती है। अगर गर्भावस्था के दौरान कुछ भी गड़बड़ी आती है तो हम गर्भनाल (प्लैसेंटा) में बदलाव देख सकते हैं जिससे पता चल सकता है कि क्या हुआ। गोल्डस्टीन ने कहा कि इससे हम कह सकते हैं कि कोविड-19 रोधी टीका लेने से गर्भनाल को कोई नुकसान नहीं होता। अनुसंधानकर्ताओं ने कहा है कि टीके को लेकर खासकर गर्भवती महिलाओं के बीच हिचक का भाव है। नार्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी में सहायक प्रोफेसर एवं अध्ययन की सह लेखक एमिली मिलर ने कहा, %%ये आरंभिक आंकड़े हैं, लेकिन हमारी टीम को उम्मीद है कि इससे गर्भावस्था के दौरान टीके लेने के खतरे को लेकर चिंताएं घट सकती हैं। अध्ययन के लेखकों ने अमेरिका के शिकागो में टीका लेने वाली 84 और टीका नहीं लेने वाली 116 गर्भवती महिलाओं में गर्भनाल का परीक्षण किया। ज्यादातर को गर्भावस्था के सातवें से नौवें महीने के दौरान मॉडर्ना और फाइजर के टीके की खुराक दी गयी थीं। मिलर ने कहा कि संक्रमण से बचाव के लिए टीके की खुराक लेने वाली गर्भवती महिलाओं को इसे सुरक्षित समझना चाहिए।

महाराष्ट्र-झारखंड समेत देश के कई राज्यों में बढ़ा लॉकडाउन

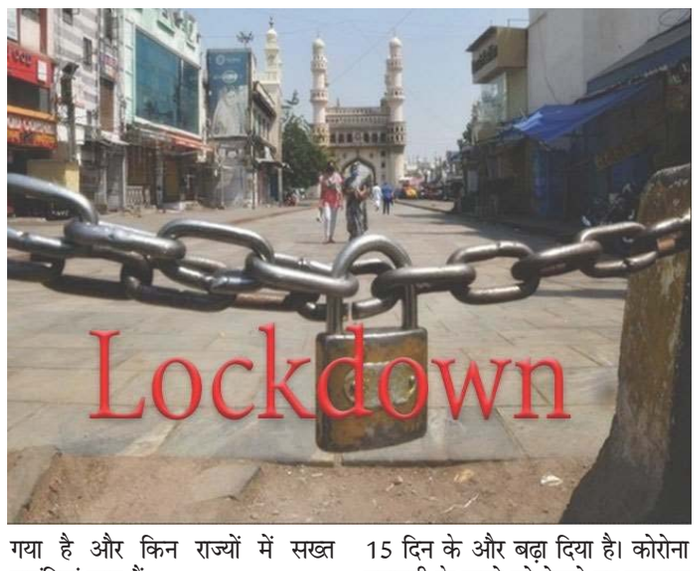

नई दिल्ली। देश में कोरोना की दूसरी लहर से हाहाकार मचा हुआ है। दूसरी लहर की चपेट में देश के ज्यादातर राज्य आए हैं। ऐसे में कोरोना के खिलाफ लॉकडाउन को सभी राज्य एक हथियार के तौर पर इस्तेमाल कर रहे हैं। देश के सभी राज्य कोरोना संक्रमण की चेन को तोड़ने की कोशिश में जुटे हुए हैं। जिससे देश में कोरोना संक्रमण की इस बेकाबू रफ्तार को कम किया जा सके। इसके मद्देनजर देश के कई राज्यों ने कोरोना वायरस लॉकडाउन को बढ़ाने का फैसला किया है। इस राज्यों में महाराष्ट्र, झारखंड, केरल जैसे तमाम राज्य हैं। इसके अलावा कई राज्य ऐसे भी है जहां पहले से लॉकडाउन या लॉकडाउन जैसी सख्त पाबंदियां लगाई जा चुकी हैं। आइए जानते हैं भारत में कोरोना वायरस लॉकडाउन की वर्तमान स्थिति क्या है, ये कितने राज्यों में बढ़ाया गया है और किन राज्यों में सख्त पाबंदियां लागू हैं...

महाराष्ट्र में 15 दिन बढ़ा लॉकडाउन-महाराष्ट्र में लॉकडाउन को 15 दिन के और बढ़ा दिया है। कोरोना महामारी के खतरे को देखते हुए महाराष्ट्र सरकार ने आगामी 1 जून तक राज्य में लॉकडाउन बढ़ा दिया है। सरकार की तरफ से आदेश भी जारी किया गया है जिनमें तमाम दिशा निर्देश है। इसमें कुछ नए नियमों को भी जोड़ा गया है ताकि कोरोना की चेन को तोड़ा जा सके। इससे पहले 15 मई तक राज्य में लॉकडाउन लागू किया गया था।

झारखंड में 27 मई तक लॉकडाउन बढ़ा-झारखंड सरकार ने मिनी लॉकडाउन (स्वास्थ्य सुरक्षा सप्ताह) को अगले दो हफ्तों के लिए बढ़ा दिया है। अब यह 27 मई सुबह छह बजे तक प्रभावी रहेगा। इसके साथ ही 16 मई की सुबह छह बजे से पूर्व से जारी प्रतिबंधों के अतिरिक्त चार नए प्रतिबंध भी प्रभावी रहेंगे। इसके तहत अब दुल्हा-दूल्हन को शामिल करके अधिकतम 11 लोगों की मौजूदगी में शादी केवल अपने घरों में या कोर्ट में संपन्न होगी। इस अवसर पर किसी प्रकार का आयोजन प्रतिबंधित रहेगा।

प्रवासी मजदूरों के लिए खाने व राशन का हो इंतजाम, केंद्र व राज्य सरकार को सुप्रीम कोर्ट का निर्देश

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट में गुरुवार को कोविड-19 महामारी की दूसरी लहर में आर्थिक संकट झेल रहे प्रवासी मजदूरों के मामले पर सुनवाई की गई। कोरोना महामारी के कारण देश के विभिन्न राज्यों में लॉकडाउन के ऐलान के बाद प्रवासी मजदूरों के हालात पर चिंता जाहिर करते हुए कोर्ट ने कहा कि इनके लिए खाद्य सुरक्षा और सस्ते ट्रांसपोर्ट विकल्प को सुनिश्चित कराने के लिए आदेश जारी करेगा। जस्टिस अशोक भूषण व एमआर शाह की बेंच ने मामले की सुनवाई की। मामले में कोर्ट ने हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश से जानकारी मांगी है। साथ ही कोर्ट ने केंद्र व राज्य सरकारों से इनके लिए भोजन व राशन का इंतजाम करने को कहा और अपने घर लौट रहे लोगों के लिए सुविधा मुहैया कराई जाए ताकि वे आराम से घर जा सकें। कोर्ट ने देश में प्रवासी मजदूरों के हालात पर चिंता जताई और उनके लिए शुरू की गई योजनाओं पर राज्य सरकारों से एक सप्ताह के भीतर जवाब देने को कहा है। कोर्ट ने केंद्र सरकार से प्रवासी मजदूरों को लेकर सवाल किया कि कोरोना महामारी के कारण बंद और लॉकडाउन ने इन्हें बेबस कर दिया है, इनके पास न रोजगार है और न पैसे। इनके पास खाने के लिए कमाई का कोई जरिया तो होना चाहिए।

पिछले दो सप्ताह में एशिया-पेसेफिक में सामने आए कोरोना के करीब 60 लाख नए मामले- रेडक्रॉस

नई दिल्ली। इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ द रेड क्रॉस ने एशिया में बढ़ते कोरोना संक्रमण को लेकर चेतावनी दी है। रेड क्रॉस का कहना है कि पिछले दो सप्ताह के दौरान एशिया में कोरोना के नए मामलों में बेतहाशा तेजी देखने को मिली है। संगठन के मुताबिक बीते दो सप्ताह में एशिया में कोरोना संक्रमण के करीब 60 लाख नए मामले सामने आए हैं, जो कि एक चिंता की बात है। हालांकि संगठन ने ये भी कहा है कि इस दौरान अधिकतर मरीजों का इलाज संभव हो पाया। संगठन का कहना है कि एशिया में आए नए मामले अमेरिका, यूरोप और अफ्रीका में आए समूचे मामलों को मिलाकर भी कहीं अधिक हैं।

रेड क्रॉस की तरफ से चेतावनी देते हुए कहा गया है कि एशिया में लगातार मामले बढ़ रहे हैं। इसकी वजह से एशियाई देशों की स्वास्थ्य सेवाओं पर भारी दबाव है। संगठन का कहना है कि बीते दो सप्?ताह में 10 में से सात देशों में कोरोना संक्रमण के मामले लगभग दोगुने हो गए हैं। लगातार बढ़ते कोरोना संक्रमण के मामलों को देखते हुए हुए इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ द रेड क्रॉस ने पूरी दुनिया से एशिया समेत पेसेफिक देशों की मदद करने का आह्वान किया है।

संगठन का कहना है कि जिस तेजी से इन क्षेत्रों में कोरोना संक्रमण की दर बढ़ रही है उस हिसाब से यहां पर अधिक संख्या में मेडिकल इक्यूपमेंट्स, जीवन बचाने की दूसरी सामग्री और वैक्सीन की सख्त जरूरत है। संगठन ने ये भी कहा है कि एशिया में बढ़ते मामलों के बीच जहां इन सभी चीजों की कमी हो रही है वहीं इनको दूर-दराज के इलाकों में पहुंचाने काफी खर्चीला है।

रेड क्रॉस एशिया पेसेफिक के डायरेक्टर एलेक्जेंडर मथाऊ का कहना है कि भारत में बीते कुछ समय में कोरोना संक्रमण की रफ्तार में जबरदस्त तेजी देखने को मिली है। इसके साथ ही यहां पर जरूरी चीजों की कमी भी देखी गई है। भारत में पिछले कुछ समय से लगातार विश्?व में सबसे अधिक संख्या में कोरोना संक्रमण के नए मामले सर्वाधिक देखने को आ रहे हैं। इन बढ़ते मामलों को अकेले रोकपाना शायद मुश्किल होगा। इसके लिए दूसरे देशों को सामने आकर भारत समेत समूचे एशिया की मदद करनी होगी। उनका कहना है कि ये समय ऐसा है कि जब हर किसी को एक दूसरे के सहयोग की अपेक्षा है।

चुनिंदा मामलों में अदालतें धारा 167 में हाउस अरेस्ट का दे सकती हैं आदेश : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली। जेलों में कैदियों की बढ़ती भीड़ से चिंतित सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यह अदालतों पर निर्भर करता है कि वह चुनिंदा मामलों में आरोपितों को सीआरपीसी के तहत हाउस अरेस्ट करने का आदेश देने पर विचार कर सकती हैं। उच्चतम न्यायालय ने कहा कि दोषी करार दिए जाने के बाद के मामलों में विधायिका कुछ मामलों में आरोपितों को नजरबंद करने पर विचार करने के लिए स्वतंत्र है। जेलों में भीड़भाड़ और जेलों की देखभाल पर राज्यों को आने वाले खर्च का जिक्र करते हुए शीर्ष अदालत ने कहा कि नजरबंदी की अवधारणा को अपनाया जा सकता है। न्यायमूर्ति यूयू ललित और केएम जोसेफ की पीठ ने कहा, हम उम्र, स्वास्थ्य स्थिति और आरोपित के इतिहास, अपराध की प्रकृति, अन्य तरह से हिरासत में रखने की जरूरत जैसे मानकों और नजरबंदी लागू करने की शर्तों के बारे में बता सकते हैं। हमारी टिप्पणी है कि धारा (सीआरपीसी) 167 के तहत चुनिंदा मामलों में अदालतें नजरबंदी का आदेश दे सकती हैं। सीआरपीसी की धारा 167 के तहत यदि 24 घंटे में जांच पूरी नहीं होती है तो अदालत हिरासत का आदेश दे सकती है।

शीर्ष अदालत का फैसला भीमा कोरेगांव

जेलों में भीड़भाड़ और जेलों की देखभाल पर राज्यों को आने वाले खर्च का जिक्र करते हुए शीर्ष अदालत ने कहा कि नजरबंदी की अवधारणा को अपनाया जा सकता है।

हिंसा मामले में गौतम नवलखा की याचिका पर आया जिन्होंने बांबे हाई कोर्ट के आदेश को चुनौती दी। उच्च न्यायालय ने इस आधार पर उन्हें जमानत देने से इन्कार कर दिया था कि कानून के तहत एनआइए ने एक निश्चित समय के अंदर आरोपपत्र दायर नहीं किया है।

गौतम नवलखा ने कानून में तय अवधि के भीतर आरोपपत्र न दाखिल होने को आधार बनाते हुए अनिवार्य जमानत दिए जाने की मांग की थी। सुप्रीम कोर्ट ने नवलखा की याचिका खारिज करते हुए कहा कि हाउस अरेस्ट को सीआरपीसी की धारा 167 के तहत दिया आदेश नहीं माना जा सकता। यानी कानून में तय समयसीमा के भीतर आरोपपत्र न दाखिल होने पर जमानत मिलने के लिहाज से इस अवधि को सुप्रीम कोर्ट ने धारा 167 के तहत हिरासत की अवधि नहीं माना।

कोर्ट ने कहा कि हाउस अरेस्ट की संकल्पना को सीआरपीसी की धारा 167 के तहत इस अदालत समेत कोई अदालत हिरासत नहीं मानती रही है। अब जब मामला प्रकाश में आया है और उसके तमाम पहलुओं को देखते हुए हमारा नजरिया है कि हाउस अरेस्ट में हिरासत कहीं न कहीं आ जाती है जो कि धारा 167 का हिस्सा है। नवलखा ने कानून में तय 90 दिन की अवधि के भीतर आरोपपत्र दाखिल न होने के आधार पर जमानत दिए जाने की मांग की थी।

कोविड-19: नदियों के जरिए कोरोना वायरस फैलने की चिंता नहीं, सोशल डिस्टेंसिंग जरूरी

नई दिल्ली। नदी के माध्यम से कोरोना वायरस का संचरण चिंता की बात नहीं है। गंगा समेत कई नदियों में कोविड-19 के संदिग्ध शवों के बहने का मामला सामने आने के बाद बुधवार को यह बात विशेषज्ञों ने कही। आईआईटी कानपुर में प्रोफेसर सतीश तारे ने कहा कि गंगा या इसकी सहायक नदियों में शवों को प्रवाहित करने का मामला गंभीर है, खासकर ऐसे समय में जब देश कोरोना वायरस महामारी के संकट से जूझ रहा है। गंगा और यमुना कई गांवों में पेयजल का मुख्य स्रोत हैं। इसके अलावा यह कई नदियों और जलाशयों के लिए जलस्रोत का काम करती है। बहरहाल, प्रोफेसर ने कहा कि शवों को नदियों में फेंकने का वायरस के संचरण पर ज्यादा असर नहीं पड़ने वाला है। हां, शवों को नदियों में फेंकने से नदियां मुख्यत- प्रदूषित होती हैं। पानी में घुलने के बाद वायरस के मनुष्य में प्रवेश करने के अब तक कोई साक्ष्य नहीं मिले हैं। उन्होंने कहा, अगर कोविड-19 के संदिग्ध रोगियों के शव बाहर भी निकाले जाते हैं तो काफी कुछ घुल चुका होता है (जल में प्रवाह के दौरान)। प्रभाव ज्यादा नहीं हो सकता है। पर्यावरण इंजीनियरिंग, जल गुणवत्ता और दूषित जल शोधन विषय पढ़ाने वाले तारे ने कहा, अगर यह जल जलापूर्ति के लिए भी जाता है तो शोधन के बाद, लिहाजा कोई समस्या नहीं है। प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार के. विजय राघवन ने भी कहा कि इस तरह के माध्यम से संचरण चिंता की बात नहीं है। उन्होंने कहा, मुख्य रूप से संचरण लोगों के बातचीत करने या जब दो लोग एक-दूसरे के नजदीक हों तब होता है। संक्रमित व्यक्ति के मुंह से पानी की छोटी बूंद किसी सतह पर गिरती है और दूसरा व्यक्ति इसके संपर्क में आता है तो यह जल के माध्यम से फैल सकता है।

डेढ़ महीने के भीतर खत्म हो जाएगा टीका संकट, दूसरी कंपनियों को कोवैक्सीन बनाने की अनुमति देने की तैयारी

नई दिल्ली। डेढ़ महीने के भीतर खत्म हो जाएगा टीका संकट, दूसरी कंपनियों को कोवैक्सीन बनाने की अनुमति देने की तैयारी देश में टीके का उत्पादन बढ़ाने के लिए सरकार स्वदेशी टीके कोवैक्सीन के निर्माण की अनुमति अन्य कंपनियों को भी देने के लिए तैयार है। केंद्रीय रसायन एवं उर्वरक राज्यमंत्री मनसुख मंडाविया ने कहा कि हम इसके लिए तैयार हैं। टीका निर्माताओं से बातचीत भी कर रहे हैं। यदि किसी दवा या टीका निर्माता कंपनी के पास इसके लिए आवश्यक ढांचा और संसाधन हैं तो वह हमारे पास आए। हम उसे तत्काल अनुमति प्रदान करें। उन्होंने एक खास बातचीत में कहा कि कोवैक्सीन चूंकि भारत में बना हुआ टीका है, इसलिए इसके निर्माण में एपीआई की समस्या नहीं है। इस अनुसंधान में सहयोगी कंपनियां जरूरत के अनुसार उसकी आपूर्ति करने में सक्षम हैं।

देश में 18 साल से अधिक आयु के लोगों का टीकाकरण शुरू होने के बाद टीके की कमी के चलते कई राज्य केंद्र से मांग कर चुके हैं कि कंपल्सिव लाइसेंसिंग के जरिए दूसरी कंपनियों को भी कोवैक्सीन के निर्माण की अनुमति दी जाए। सरकार का रुख स्पष्ट है कि इसके लिए बातचीत की जा रही है। उसने दवा क्षेत्र को भी आमंत्रित किया है कि यदि उनमें निर्माण की क्षमता है तो वे अनुमति के लिए आवेदन करें।

विदेशी टीकों को लेकर प्रयास तेज-उन्होंने कहा कि देश में टीके की कमी दूर करने के लिए कई स्तरों पर प्रयास हो रहे हैं। हम विदेशों से टीके की खरीद और विदेशी कंपनियों को भारत में उत्पादन शुरू करने के लिए भी प्रयासरत हैं। फाइजर तथा जानसन एंड जानसन से टीकों के आयात और देश में उत्पादन शुरू करने के लिए भारत सरकार ने बातचीत आरंभ कर दी है। फाइजर ने कुछ मुद्दे उठाए हैं, उनका समाधान कुछ दिनों में हो जाने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि असल समस्या यह है कि विदेशी कंपनियां भी कई देशों से ऑर्डर ले चुकी हैं तथा पूरी क्षमता के साथ कार्य कर रही हैं। उन्होंने कहा कि स्पूतनिक वी की खरीद के लिए रूस के साथ पहले ही प्रक्रिया शुरू हो चुकी है।

विदेश मंत्रालय कर रहा बातचीत

उन्होंने कहा कि विदेश मंत्रालय इन कंपनियों से बातचीत कर रहा है। यदि आने वाले दिनों में इनके साथ खरीद का समझौता हो जाता है तो इससे राज्यों को भी फायदा होगा और कॉरपोरेट अस्पताल, निजी कंपनियां भी सीटे विदेशों से टीका खरीद सकेंगे। निजी कंपनियां अपने स्टाफ के टीकाकरण के लिए सीधे टीका विदेशों से खरीद सकेंगी।

कोरोना की दूसरी लहर में DRDO ने बदल दी प्राथमिकता, अस्पताल से लेकर जीवन रक्षक दवाइयां बनाने में झोंकी ताकत

नई दिल्ली। देश में कोरोना का संकट है। केंद्र से लेकर राज्य सरकारों की एजेंसियां लगातार इससे देश को बाहर निकालने के लिए काम कर रही हैं। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन, जिसकी प्रथमिकाता अत्याधुनिक हथियारों, रणनीतिक मिसाइलों और बैलिस्टिक मिसाइल वाली पनडुब्बियों को विकसित करना है, वह भी देशवासियों को इस महामारी से बचाने के लिए प्रतिबद्ध है। संगठन ने अपनी पूरी ताकत इन दिनों कोरोना के खिलाफ लड़ाई में लगा दिया है। डीआरडीओ ने कोविड -19 के कारण विशिष्ट चिकित्सा देखभाल की आवश्यकता वाले मरीजों की मदद करने के लिए नकारात्मक दबाव वाले टेंट के साथ अस्पताल बनाया है। आईसीयू बेड, ऑक्सीजन बेड और सामान्य बेड पर अस्पताल के बुनियादी ढांचे को विकसित करने के लिए राज्य के स्वास्थ्य अधिकारियों के परामर्श से काम किया।

DRDO ने 9 शहरों में खोले अस्पताल-डीआरडीओ द्वारा दिल्ली, अहमदाबाद, लखनऊ, वाराणसी, गांधी नगर, हल्द्वानी, ऋषिकेश, जम्मू और श्रीनगर जैसे शहरों में नौ अस्पताल खोले गए हैं। इनमें सबसे बड़ा गांधी नगर में धन्वंतरि कोविड केयर अस्पताल है जिसमें 700 ऑक्सीजन बेड और 200 आईसीयू बेड हैं। दिल्ली में, सरदार पटेल कोविड केयर सेंटर में 500

आईसीयू बेड की सुविधआ है।

DRDO ने देश भर के विभिन्न अस्पतालों में ऑक्सीजन उत्पादन संयंत्रों की स्थापना का भी ऑर्डर दिया है। संगठन ने कहा कि ये ऑक्सीजन संयंत्र प्रति मिनट 1,000 लीटर तक ऑक्सीजन उत्पन्न कर सकते हैं जो 190 रोगियों की जरूरत को पूरा करने की क्षमता रखता है। ये प्लांट प्रतिदिन 195 सिलेंडर तक चार्ज कर सकते हैं।

आक्सीजन की कमी दूर करने में जुटा DRDO-शोध संगठन ने कहा कि पहले दो ऑक्सीजन प्लांट दिल्ली पहुंचे और 6 मई को एम्स और राम मनोहर लोहिया (आरएमएल) अस्पतालों में इनका परिचालन किया गया। दिल्ली में आने वाले तीन संयंत्र लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, सफदरजंग अस्पताल और झज्जर स्थित एम्स में स्थापित किए जाएंगे। डीआरडीओ ने छोटे अस्पतालों के लिए कम क्षमता वाले मेडिकल ऑक्सीजन संयंत्रों के उत्पादन में तेजी लाने के लिए और अधिक उद्योग भागीदारों के साथ डील की पहल की है।

ऑक्सीजन के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए विकसित की प्रणाली-ऑक्सीजन के उत्पादन को और बढ़ावा देने के लिए, DRDO ने SpOw (ऑक्सीजन संतृप्ति) स्तर के आधार पर अपनी ऑक्सीजन आपूर्ति प्रणाली विकसित की। इसे ऑक्सीकारे कहा जाता है। ये मैनुअल और ऑटोमेटिक होते हैं। इसे DRDO के बेंगलुरु स्थित डिफेंस बायो-इंजीनियरिंग और इलेक्ट्रो मेडिकल लेबोरेटरी द्वारा अत्यधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में तैनात सैनिकों के लिए विकसित किया गया था। सरकार ने बुधवार को 'ऑक्सीकार' प्रणाली की 1,50,000 इकाइयों की खरीद को मंजूरी दे दी। डीआरडीओ ने बड़े पैमाने पर प्रणाली के उत्पादन के लिए भारत में पहले ही कई उद्योगों को तकनीक हस्तांतरित कर दी है। इसके अलावा, सुरक्षा अनुसंधान पर काम कर रहे DRDO की प्रयोगशाला ने सरकारी एजेंसी द्वारा बनाए गए अस्पतालों को 1,200 लीटर के 100 से अधिक सिलेंडर दिए हैं। डीआरडीओ की एक प्रयोगशाला ने 2-डीऑक्सी-डी-ग्लूकोज (2-डीजी) दवा का एक एंटी-कोविड-19 चिकित्सीय अनुप्रयोग विकसित किया है। नैदानिक परीक्षण के परिणामों से पता चला है कि यह मरीजों की तेजी से रिकवरी में मदद करता है और पूरक ऑक्सीजन निर्भरता को कम करता है।

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संपादकीय

बच्चों को वैक्सीन

भारत में वैक्सीन से संबंधित विशेषज्ञ समिति ने भारत बायोटेक की कोवैक्सीन का दो से 18 साल के बच्चों पर परीक्षण की मंजूरी दी है। इस वैक्सीन के तीन चरणों के परीक्षण में कुछ महीने लगेंगे और अगर यह परीक्षण में कसौटी पर खरी उतरी, तो संभव है कि बच्चों को भी टीका लगाने का काम शुरू हो सके। अभी तक सिर्फ अमेरिका में फाइजर मॉडर्ना वैक्सीन को बारह साल से बड़े बच्चों को लगाने की शुरुआत हुई है, बाकी सभी जगहों पर कोरोना की सारी वैक्सीन सिर्फ वयस्कों को लग रही है। संभव है, और भी कई जगह बच्चों को वैक्सीन लगाने के लिए परीक्षण चल रहे हों, और कुछ अरसे में और देश भी बच्चों को टीका लगाना शुरू कर दें, लेकिन फिलहाल सबका ध्यान मुख्यत- ज्यादा से ज्यादा वयस्कों को टीका लगाने पर है। जब कोरोना टीकों के लिए जगह-जगह परीक्षण चल रहे थे, तब वे सिर्फ वयस्कों पर ही किए जा रहे थे। इसकी वजह यह थी कि कोरोना महामारी का शिकार तब वयस्क ही ज्यादा हो रहे थे। बच्चों पर इसका असर बहुत कम हो रहा था और अगर उन्हें हो भी रहा था, तो उनका रोग प्रतिरक्षा तंत्र इस बीमारी का सामना बहुत मुस्तैदी से कर ले रहा था, इसलिए उन्हें बहुत मामूली लक्षण हो रहे थे। लेकिन कोरोना की बाद की लहर में बच्चे पहले से ज्यादा बीमार हो रहे हैं, हालांकि उनमें गंभीर लक्षण अब भी ज्यादा नहीं दिख रहे हैं। कुछ बच्चों में जरूर प्रतिरोधक तंत्र के अति सक्रिय होने के कारण गंभीर बीमारी के लक्षण हुए हैं, लेकिन उनकी संख्या बहुत कम है। फिर भी दूरगामी नजरिए से कोरोना के स्थाई नियंत्रण के लिए बच्चों को भी वैक्सीन लगाना महत्वपूर्ण होगा। खास तौर पर टीका लगवाने के बाद उनके स्कूल जाने, अन्य बच्चों के साथ घुलने-मिलने और खेलने-कूदने में दिक्कतें खत्म हो जाएंगी। भले ही बच्चे खुद बीमार कम हुए, लेकिन परोक्ष रूप से इस महामारी की मार उन पर कम नहीं पड़ी है। बढ़ती उम्र के बच्चों के लिए तो एक साल से ज्यादा वक्त से घर में कैद रहना, हमउम्र बच्चों के साथ खुली हवा में न खेल पाना बहुत बड़ी सजा है, और उनके विकास पर इसका बुरा असर होता है। टीका इन समस्याओं से निजात दिलाने में बहुत उपयोगी साबित हो सकता है। बच्चों के लिए वैक्सीन का परीक्षण करने की कुछ कठिनाइयां भी हैं और कुछ आसानियां भी। बच्चों के लिए वैक्सीन या किसी दवा का भी सही मात्रा का निर्धारण करना काफी नाजुक मामला होता है। जैसे सभी वयस्कों को लगभग एक ही मात्रा दे सकते हैं, वैसा बच्चों के साथ नहीं होता। अक्सर अलग-अलग उम्र और वजन के बच्चों के लिए अलग-अलग मात्रा की जरूरत होती है। बच्चों में दुष्प्रभावों को लेकर भी ज्यादा सचेत रहना होता है। दूसरी ओर, बच्चों का बेहतर रोग प्रतिरोध तंत्र वैक्सीन को ज्यादा प्रभावशाली बना देता है, इसीलिए बचपन में लगाए गए टीकों का असर बहुत अच्छा होता है। बच्चों में टीके का परीक्षण अच्छी खबर है, लेकिन फिलहाल हमारी समस्या वयस्कों के लिए टीकों की कमी है। वैसे हम यह उम्मीद कर सकते हैं कि जब तक बच्चों के लिए टीके मंजूर होंगे, तब तक टीकों का उत्पादन भी बढ़ जाएगा और कुछ अन्य टीके भी भारत में आ जाएंगे। तब बच्चों को टीका लगवाना इतना कठिन नहीं होगा, जितना फिलहाल वयस्कों के लिए हो रहा है।

पोजिटिव सोच और स्वास्थ्य प्रोटोकाल से हारेगा कोरोना

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

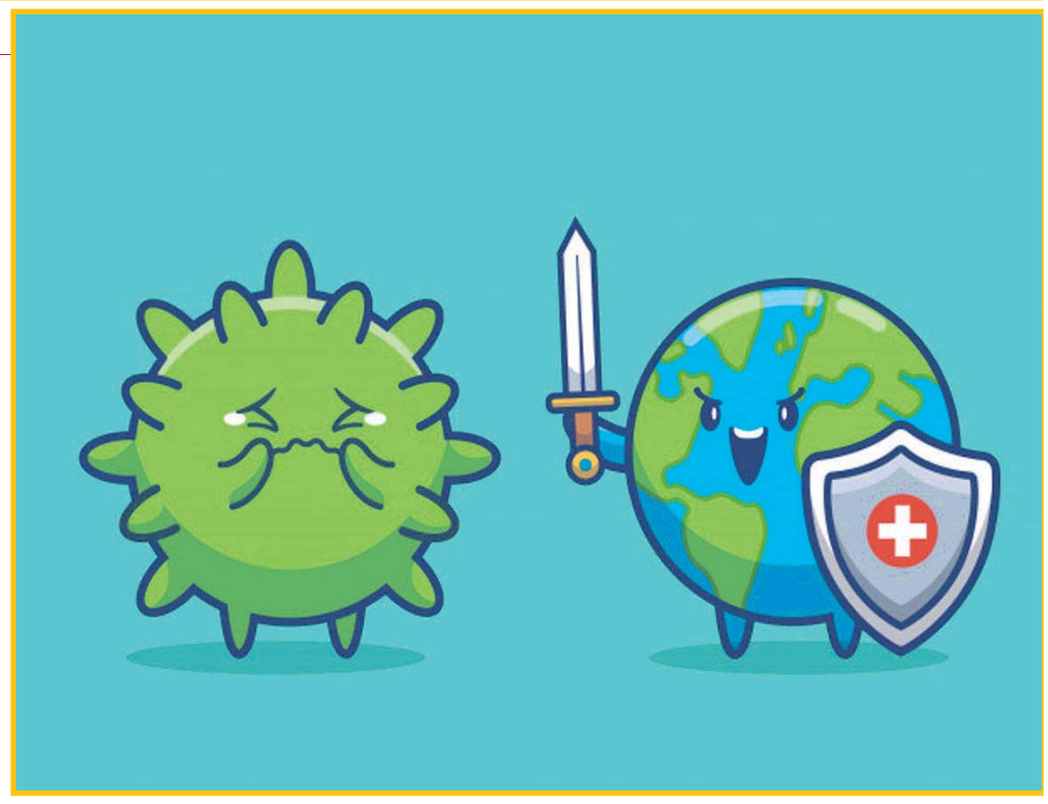

पोते को कोरोना न हो जाए इसी डर से राजस्थान में दादा-दादी ने ट्रेन के आगे कूदकर जान दे दी तो परिवार के लोगों को कोरोना से बचाने के लिए मकान से कूदकर जान देने के समाचार प्रमुखता से समाचार पत्रों में पिछले दिनों प्रकाशित हुए हैं। यह तो उदाहरण मात्र है। दरअसल कोरोना का भय और नकारात्मक व डरावने समाचारों से कमजोर दिल के लोग अब मानसिक अवसाद में जाने लगे हैं। कुछ लोग तो इतने अवसाद में जाने लगे हैं कि अपनी इहलीला समाप्त कर रहे हैं। यह कोई कोरोना के दूसरी लहर की बात ही नहीं है अपितु इस तरह के समाचार कोरोना के पहले दौर में भी हमारे देश में ही नहीं अपितु दुनिया के दूसरे देशों में भी आम रहे हैं। कोरोना के पहले दौर में जयपुर के आरयूएचएस की दूसरी मंजिल से संदिग्ध कोरोना मरीज 78 वर्षीय बुजुर्ग कैलाश चंद्र की आत्महत्या का मामला हो या दिल्ली में पत्रकार तरुण सिसौदिया के कोरोना केन्द्र की छत से कूदकर जीवन लीला समाप्त करने का प्रकरण। इस तरह के बहुत से समाचार, अखबारों में देखने को मिलते रहे हैं। इस तरह के उदाहरण खासतौर से कोरोना के कारण आत्महत्या के प्रयास या गहरे डिप्रेशन के समाचार समूची दुनिया से आ रहे हैं। कोरोना महामारी का डर और कोरोना के कारण दुनियाभर में समय समय पर लगाए गए लॉकडाउन का साइड इफेक्ट यह सामने आ रहा है कि दुनिया के देशों में डिप्रेशन के मामलों में तेजी आई है। आदमी अपने आप में खोने लगा है। देखा जाए तो कोरोना महामारी ने केवल बीमारी ही नहीं अपितु इसने जीवन के लगभग सभी मोर्चों को हिलाकर रख दिया है। यहां तक कि सामाजिक ताना-बाना भी प्रभावित होने लगा है। कोरोना ने मनुष्य के सामाजिक प्राणी होने के कंसेप्ट को ही बदल कर रख दिया है। हालात यह हो गई है कि घर में किसी के हल्की खांसी या गले में खरास भी देखने को मिलती है तो पहली प्रतिक्रिया उसे घर में ही आइसोलेट करने की हो रही है। कोरोना का भय ही ऐसा है कि लोग डरने लगे हैं। घर पर ही मास्क लगाने लगे हैं पर यह कुछ लोगों तक ही सीमित है। क्योंकि जिस तेजी से देश में कोरोना की दूसरी लहर ने जकड़ा है वह कोरोना प्रोटोकाल की पालना के प्रति हमारा गंभीर नहीं होने का ही परिणाम है। जिस तरह से घर-परिवार, मिलने जुलने वालों से आइसोलेट हो जाता है तो इससे थोड़े भी संवेदनशील मानसिकता के लोग डिप्रेशन के शिकार हो जाते हैं। उसका दुष्परिणाम यह भी आता है कि ऐसे मरीजों के रिकवर होने में अधिक समय लगने लगता है। कोरोना महामारी के कारण मानसिक अवसाद की स्थिति को लेकर विश्व स्वास्थ्य संगठन की कोरोना की पहले दौर के दौरान आई थी रिपोर्ट भी दहला देने वाली है। रिपोर्ट के अनुसार हालतों में बदलाव नहीं आता है तो देश के 20 फीसदी लोग कोरोना के कारण डिप्रेशन का शिकार हो जाएंगे। यह अपने आप में गंभीर और चिंतनीय है। चैन्नई के मानसिक स्वास्थ्य संस्थान के निदेशक डॉ.आर. पूर्णा चन्द्रा के अनुसार कोरोना के पहले दौर में अप्रैल 20 में ही हालात यह रहे कि कोरोना के कारण डिप्रेशन से प्रभावित 3632 लोगों ने फोन से सलाह प्राप्त की। यह तो केवल बानगी मात्र है। दरअसल लोग कोरोना से इस कदर भयक्रांत हो गए हैं कि वे सोच- सोचकर ही डिप्रेशन में जाने लगे हैं। देखा जाए तो कोरोना से लड़ने के लिए जिस तरह का सकारात्मक माहौल बनना चाहिए वह दुनिया के देशों में कहीं नहीं बन रहा है। दरअसल कोरोना की दूसरी लहर और भी अधिक भयावह होकर आई है। दूसरी लहर में देश में जहां संक्रमितों का एक दिनी आंकड़ा करीब चार लाख को छूने लगा है तो दूसरी और मौत का आंकड़ा भी तेजी से बढ़ा है। कोढ़ में खाज यह कि समूचे देश में ऑक्सीजन की कमी के कारण दम तोड़ते लोगों की तस्वीरों के साथ के समाचार या फिर अस्पतालों के बाहर बेड की अनुपलब्धता के समाचारों ने और भी अधिक भयाक्रांत कर दिया है। मीडिया चाहे वह प्रिंट हो या इलेक्ट्रोनिक उसे यह समझना होगा कि जिस तरह की परिस्थितियां आई है और जो हालात सारी दुनिया के हो रहे हैं उसमें नकारात्मक समाचारों से हम समाज को नुकसान ही पहुंचाएंगे। जब अस्पतालों में जगह नहीं मिलने, दवा की उपलब्धता नहीं होने या फिर उपकरणों का कृत्रिम अभाव, ऑक्सीजन सिलेण्डरों की कमी या इस तरह के समाचार अधिक प्रमुखता से सामने लाए जाते हैं तो इसका साइड इफेक्ट भी हमें समझना होगा। हांलाकि मीडिया यह सबकुछ हालात सुधारने की नसीहत से करता है पर इसका नकारात्मक पक्ष इस मौके में भी लाभ तलाशने वालों की कोई कमी नहीं हैं। अस्पतालों में बेड के नाम पर लाखों रुपए वसूलने, रेमडिसियर इंजेक्शन की कालाबाजारी, गैस सिलेण्डरों उपलब्ध कराने के लिए मनचाहे दाम वसूलने, आक्सीमीटर जैसे साधारण पर आज की तारीख में महत्वपूर्ण उपकरण के कई गुणा दाम वसूलने और इनकी कालाबाजारी करने वाले लोगों की गिरफ्तारी से ऐसी स्थितियों की गंभीरता को समझना होगा। यह जरूरी है और लोगों में जागरुकता भी होनी चाहिए पर संक्रमण का भय, अब क्या होगा का भय, नौकरी जाने का या इनकम कम होने के भय के कारण कमजोर मानसिकता वाले लोग जल्दी डिप्रेशन का शिकार होने लगे हैं। इसलिए कहीं ना कहीं मनोविश्लेषकों को इसका हल खोजना होगा ताकि लोगों में सकारात्मकता बढ़े। कोरोना के साइड इफेक्ट के कारण लोगों की नींद उड़ने लगी है तो व्यक्ति एकाकी होने लगा है। लंबे समय के वर्क फॉम होम से घर का वातावरण भी बोझिल होता जा रहा है तो बाहर निकलते ही डर लगने लगा है। इससे डिप्रेशन के सामान्य लक्षण बैचेनी, नींद नहीं आना, नकारात्मक विचार आदि तो अब आम होता जा रहा है। ऐसे में मनोविज्ञानियों और मनोविश्लेषकों के सामने मेडिकल चिकित्सकों से भी अधिक चुनौती उभरकर आई है। जब यह तय है कि अभी लंबे समय तक हमें कोरोना के साथ ही जीना है तो अपनी सोच में सकारात्मकता लानी होगी। लोगों में भय के स्थान पर जीवटता पैदा करनी होगी तभी कोरोना के इस संक्रमण काल से हम निकल पाएंगे।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

आज के ट्वीट

लड़ाई और तेज़ करो.

इजरायल की मात्र सरकार ही नही विपक्ष भी राष्ट्रभक्त है इजरायल हमास के आतंकियो पर बरस रहा है,गाजापट्टी में बमबारी कर रहा है, दुनिया के 56 इस्लामिक देश समेत भारत के भी कुछ दोगले वीरोध कर रहे है फिर भी इज़राइल का विपक्ष है कह रहा है कि, लड़ाई और तेज़ करो.!- पुष्पेंद्र कुलश्रेष्ठ

ज्ञान गंगा

समाज सुधार

श्रीराम शर्मा आचार्य

व्यक्तियों के समूह का नाम ही तो समाज है। हम सब अपने आपको सुधारें तो समाज का सुधार जरूर होकर रहेगा। कुछ मूढ़ताएं, नासमझी, अन्ध-परम्पराएं, अनैतिकताएं, संकीर्णताएं, हमारे सामूहिक जीवन में प्रवेश पा गई हैं। दुर्बल मन से सोचने पर वे बड़ी कठिन बड़ी दुस्तर, बड़ी गहरी जमी हुई दिखती हैं, पर वस्तुत- वे कागज के बने रावण की तरह डरावनी दीखते हुए भी भीतर ही भीतर खोखली हैं। हर विचारशील उनसे घृणा करता है। हर समझदार उसके बारे में बिल्कुल भी नहीं विचार करना चाहेगा। पर अपने को एकाकी अनुभव करके आस-पास घिरे लोगों की भावुकता से डर कर कुछ कर नहीं पाता। कठिनाई इतनी सी है। इसे कुछ ही थोड़े से विवेकशील लोग, यदि संगठित होकर उठ खड़े हों और जमकर विरोध करने लगें तो उन कुरीतियों को मामूली से संघर्ष के बाद चकनाचूर कर सकते हैं, तोड़-मरोड़ कर फेंक सकते हैं। गोवा की जनता ने जिस प्रकार भारतीय फौजों का स्वागत किया वैसा ही स्वागत इन कुरीतियों से सताई हुई जनता उनका करे जो इन अन्ध परम्पराओं को तोड़-मरोड़ कर रख देने के लिए कटिबद्ध सैनिकों की तरह मार्च करते हुए आगे बढ़ेंगे। हत्यारा दहेज कागज के रावण की तरह बड़ा वीभत्स-नृशंस एवं डरावना लगता है। हर कोई भीतर ही भीतर उससे घृणा करता है, पर पास जाने से डरता है। हर कोई इस मसले पर बात करने से बचता है। हालांकि अगर कुछ साहसी लोग उसमें पलीता लगाने को दौड़ पड़ें तो उसका जड़ मूल से उन्मूलन होने में देर न लगेगी। दास-प्रथा, देवदासी प्रथा, वेश्या नृत्य, बहु-विवाह, जन्मते ही कन्यावध, भूत पूजा, पशुबलि आदि अनेक सामाजिक कुरीतियां किसी समय बड़ी प्रबल लगती थीं, अब देखते-देखते उनका नाम निशान मिटता चला जा रहा है। आज जो कुरीतियां, अनैतिकताएं एवं संकीर्णताएं मजबूती से जड़ जमाये दिखती हैं विवेकशीलों के संगठित प्रतिरोध के सामने देर तक न ठहर सकेंगी। बालू की दीवार की तरह वे एक ही धक्के में भरभरा का गिर पड़ेंगी। विचारों की क्रान्ति का एक ही तूफान इस तिनकों के ढेर को उड़ाकर बात की बात में छितरा देगा। जिस नये समाज की रचना आज स्वप्न सी लगती है, विचारशीलता के जाग्रत होते ही वह मूर्तिमान होकर सामने खड़ी दिखेगी।

विपक्ष आलोचना करने की बजाय सुझाव दे

सियाराम पांडेय 'शांत'

केंद्रीय रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा है कि कोरोना महामारी से निपटने के लिए केंद्र और राज्य सरकारें बेहतर काम कर रही हैं। विपक्ष आलोचना करने की बजाय सुझाव दे। केंद्रीय रक्षामंत्री की इस नसीहत का स्वागत किया जाना चाहिए लेकिन उनकी इस नसीहत ने आलोचना और सुझाव के अंतर को सुस्पष्ट करने को भी विवश कर दिया है। सुझाव की जाहिर तौर पर अपनी अलग जगह है लेकिन आलोचना में सुझाव सहज समाहित होता है। सत्तारूढ़ दल जब स्वतः निर्णय लेने लगते हैं और प्रतिपक्ष को लगता है कि उसकी बात, उसके सुझाव या तो सुने नहीं जा रहे या सुनकर भी उसे अनसुना किया जा रहा है, तब वे आरोप और आलोचना को ओर अग्रसर होते हैं। सत्तारूढ़ दल और विपक्ष दोनों मिलकर लोकतंत्र को मजबूत बनाते हैं। कमजोर विपक्ष हो, मजबूत सरकार हो तो भी और मजबूत विपक्ष हो, कमजोर सरकार हो तो भी लोकतंत्र मजबूत नहीं हो पाता। अगर सरकार हर किसी से सकारात्मक होने की ही अपेक्षा करने लगे और सारे लोग सकारात्मक ही देखने और दिखाने लगें तो यह किसी भी देश के लिए और अधिक त्रासद स्थिति होगी। सरकार अगर सुझावों पर अमल करती तो फिर आलोचना और आरोप की नौबत ही नहीं आती। आंखों पर गुलाबी चश्मा लगा लेना या फिर अपनी सुविधा का संतुलन देखना और बात है लेकिन जब बात जनहित की हो तो समग्रता में देखना ही उचित होता है। इसमें शक नहीं कि केंद्र और राज्य सरकारें कोरोना महामारी से निपटने के लिए यथासंभव प्रयास कर रही है। लोगों को टीका लगवाने से लेकर ऑक्सीजन, वेंटिलेटर और ऑक्सीजन उपलब्ध कराने के लिए वह देश-विदेश से सहयोग प्राप्त कर रही है। यह और बात है कि इस देश के लोगों को अस्पतालों में बेड, ऑक्सीजन, वेंटिलेटर का अभाव झेलना पड़ा है। भाजपा के सांसद और विधायक भी अपने परिजनों को बेड नहीं दिला सके। अतिविशिष्ट लोग जब परेशान हुए तो आम जनता को कितनी परेशानी हुई होगी, इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। जिस तरह से देश की अदालतों ने केंद्र और राज्य सरकारों को फटकार लगाई है, उसे भी हल्के में नहीं लिया जा सकता। यह सच है कि सरकार चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता को लेकर बेहद संजीदगी से काम कर रही है। इस निमित्त उसने सेना को भी लगा दिया है। डीआरडीओ के स्तर पर जगह-जगह हजार बेड के कोविद अस्पताल बनाए जा रहे हैं। हर अस्पताल में ऑक्सीजन उत्पादन संयंत्र लगाए जा रहे हैं। देशभर के हज हाउसों को कोविड अस्पतालों में बदलना अच्छी बात है। फौरी तौर पर इससे राहत मिल सकती है, लेकिन हमें विकल्प से अधिक स्थायी विकास को तरजीह देनी चाहिए। हाल के दिनों में जिस कोरोना संक्रमितों की तादाद घटी है, वह अपने आप में सुखद है लेकिन जिस तरह कोरोना की तीसरी लहर की आशंका है। ब्लैक फंगस के खतरे बढ़ रहे हैं, उसमें सरकार को अपने प्रयासों को लेकर आत्ममुग्ध होने की जरूरत नहीं है। इस समय सरकार जो कुछ भी कर रही है, वह प्यास लगने पर कुआं खोदने जैसा है।

विपक्ष अगर यह कह रहा है कि सरकार के तर्कों और दलीलों से लाशों को छिपाया नहीं जा सकता तो उसके निहितार्थ को समझा जाना चाहिए। प्रयास किया जाना चाहिए कि विपक्ष को इस तरह की बात करने का अवसर ही न मिले। विपक्ष न तो सलाहकार है और न ही चारण। उससे ठकुरसुहाती की उम्मीद भी नहीं की जानी चाहिए। गंगा में लाशें चाहे बिहार में मिलें या उत्तर प्रदेश में, यह कहकर जिम्मेदारियों से बचा नहीं जा सकता कि लाशें उनके राज्य की नहीं हैं, दूसरे राज्य से बहकर आई हैं। विपक्ष को सुझाव देना चाहिए या आलोचना करनी चाहिए, यह बहस और मुबाहिसे का विषय हो सकता है लेकिन जिसका जो दायित्व है, उसे उसी का निर्वाह करना चाहिए। विपक्ष सरकार का प्रशस्तिगान नहीं कर सकता। उसके द्वारा की जाने वाली आलोचना में ही सरकार का व्यापक हित निहित है। अपने देश में निंदक नियरे राखिए आंगन कुटी छवाय वाली परंपरा रही है।आलोचना आत्मावलोकन का अवसर देती है जबकि प्रशंसा में व्यक्ति अक्सर खुद को ठीक से समझ न पाने की भूल कर बैठता है। इसलिए भी सरकार को चाहिए कि वह सुने सबकी, करे अपने मन की।निर्णय तो उसे स्वविवेक के आधार पर ही लेना है। सरकार को दूसरों से सकारात्मक होने की अपेक्षा करने की बजाय खुद सकारात्मक होना है। विपक्ष अगर सुझाव तक ही सिमट जाएगा तो उसका वजूद ही खत्म हो जाएगा। सुझाव देना वैसे भी विपक्ष का काम नहीं है। विरोधी दल तो विरोध ही करता है। विरोध तो विरोध होता है। चाहे वह सकारात्मक हो या नकारात्मक। विपक्ष की भूमिका एक सशक्त आलोचक की होनी चाहिए। विरोध में भी दृष्टिबोध होना चाहिए। सुझाव देना सलाहकार का काम होता है और सरकार के पास सलाह देने वालों की कहीं कोई कमी नहीं। वह निजी क्षेत्र के विशेषज्ञों की भी सेवा लेती है। कौन क्या कह रहा है,यह उतना मायने नहीं रखता जितना यह कि हम क्या कर रहे हैं।

विपक्ष हमेशा गंभीर मुद्दों पर सर्वदलीय बैठक बुलाने की मांग करता रहता है। सरकारें बहुधा ऐसा करती भी हैं, लेकिन सर्वदलीय बैठक के मुद्दों पर कितना अमल हो पाता है, यह भी किसी से छिपा नहीं है। विपक्ष को विरोध का अवसर चाहिए और सरकार को जनहितकारी योजनाओं को आगे बढ़ने का। उसे आलोचनाओं और सुझावों की अपेक्षा किए बगैर केवल अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभानी है। अगर सब अपना-अपना काम करने लगें तो आधी समस्या का समाधान तो वैसे ही हो जाए। कोरोना काल में जागरूकता बहुत जरूरी है। इस मोर्चे पर तो काम करना ही है, जनता जनार्दन के हितों का ध्यान रखते हुए चिकित्सा सुविधाओं में इजाफा भी करते जाना है अन्यथा आनेवाला समय हमें माफ नहीं करेगा।

(लेखक हिन्दुस्थान समाचार से सम्बद्ध हैं।)

आज का राशिफल

मेष गृहोपयोगी वस्तुओं में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। कार्यक्षेत्र में रुकावटों का सामना करना पड़ेगा। व्यर्थ के कार्यों में धन खर्च करने के योग हैं। राजनैतिक दिशा में किए गए प्रयास सफल होंगे।

वृषभ पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। रुपए पैसे के लेन-देन में सावधानी रखें। आय और व्यय में संतुलन बनाकर रखें। वाहन प्रयोग में सावधानी रखें।

मिथुन आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। भाग्यवश कुछ ऐसा होगा जिसका आपको लाभ मिलेगा। प्रेम प्रसंग प्रगाढ़ होंगे। किसी अभिन्न मित्र या रिश्तेदार से मिलाप की संभावना है।

कर्क बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। पारिवारिक जनों से पीड़ा मिलने के योग हैं। व्यावसायिक क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। मनोरंजन के अवसर प्राप्त होंगे। प्रणय संबंध मधुर होंगे।

सिंह व्यावसायिक योजना सफल होगी। आय और व्यय में संतुलन बनाकर रखें। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। मकान सम्पत्ति व वाहन की दिशा में किया गया प्रयास सफल होगा।

कन्या रोजी रोजगार की दिशा में सफलता के योग हैं। सृजनात्मक कार्यों में हिस्सा लेना पड़ सकता है। खान-पान में संयम रखें। संतान के संबंध में सुखद समाचार मिलेगा। दूसरों से सहयोग लेने में सफल रहेंगे।

तुला शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। संतान के संबंध में सुखद समाचार मिलेगा। अपनों का सहयोग मिलेगा। वाणी की सौम्यता आपको धन लाभ करायेगी। व्यर्थ की भागदौड़ होगी।

वृश्चिक व्यावसायिक योजना सफल होगी। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय न लें। आर्थिक उन्नति होगी। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। आय और व्यय में संतुलन बनाकर रखें। वाहन प्रयोग में सावधानी अपेक्षित है।

धनु पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। व्यावसायिक योजना सफल होगी। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। जीवन साथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा।

मकर बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। नेत्र विकार की संभावना है। अनावश्यक व्यय का सामना करना पड़ेगा।

कुम्भ दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। खान-पान संयम रखें। आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। प्रणय संबंध प्रगाढ़ होंगे। विरोधियों का पराभव होगा।

मीन जीविका के क्षेत्र में प्रगति होगी। संतान के कारण चिंतित रहेंगे। आपके पराक्रम में वृद्धि होगी। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय न लें। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। प्रेम प्रसंग प्रगाढ़ होंगे। रुका हुआ कार्य सम्पन्न होगा।

इंफोसिस के सह- संस्थापक शिबूलाल ने कंपनी के 100 करोड़ रुपए के शेयर खरीदे

नयी दिल्ली, इंफोसिस के सह संस्थापक शिबूलाल ने खुले बाजार में किये गये लेन-देन के जरिए प्रमुख आईटी कंपनी के 100 करोड़ रुपए के शेयर खरीद लिए। बीएसई के पास मौजूद नवीनतम आंकड़े के मुताबिक शिबूलाल ने 1,317.95 रुपए प्रति शेयर के औसत मूल्य पर कंपनी के 7.58 लाख शेयर खरीदे जिनकी कुल कीमत 100 करोड़ रुपए है। इंफोसिस द्वारा दी गयी नियामकीय सूचना के मुताबिक इस सौदे के साथ कंपनी में शिबूलाल की कुल हिस्सेदारी बढ़कर 0.07 प्रतिशत हो गयी। मार्च 2021 तिमाही के खत्म होने पर शिबूलाल की हिस्सेदारी 0.05 प्रतिशत थी। एक अन्य नियामकीय सूचना के मुताबिक शिबूलाल की पत्नी कुमारी ने बुधवार को इन्फोसिस के 7.58 लाख शेयर 1,317.95 रुपये प्रति शेयर के भाव पर बेचे। इस सौदे के बाद कंपनी में उनकी हिस्सेदारी 0.21 प्रतिशत से घटकर 0.19 प्रतिशत रह गई।

ल्यूपिन का मुनाफा 18 प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली। दवा विनिर्माता कंपनी ल्यूपिन ने कहा कि 31 मार्च 2021 को समाप्त बीते वित्त वर्ष की आ खिरी तिमाही के दौरान उसका मुनाफा 18 प्रतिशत बढ़कर 460 करोड़ रुपए हो गया। कंपनी ने बताया कि घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजार में बिक्री बढ़ने से उसका मुनाफा बढ़ा। मुंबई स्थित कंपनी ने 2019-20 की जनवरी-मार्च तिमाही में 390 करोड़ रुपए का मुनाफा दर्ज किया था। ल्यूपिन ने कहा कि हालांकि इस दौरान उसकी परिचालन से कुल आय घटकर 3,783 करोड़ रुपए रह गई, जो इससे पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में 3,846 करोड़ रुपए थी। वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान कंपनी ने 1,216 करोड़ रुपए का संचयी शुद्ध लाभ दर्ज किया, जबकि इससे पिछले वित्त वर्ष के दौरान उसे 269 करोड़ रुपए का घाटा हुआ था। इस दौरान परिचालन से कुल आय 15,163 करोड़ रुपए रही, जो 2019-20 में 15,375 करोड़ रुपए थी।

टिप्स इंडस्ट्रीज और गूगल के बीच म्यूजिक लाइसेंसिंग समझौता

नई दिल्ली। संगीत कारोबार से जुड़ी कंपनी टिप्स इंडस्ट्री ने कहा कि उसने गूगल की नई यूट्यूब सर्विस शॉर्ट्स के साथ म्यूजिक लाइसेंसिंग समझौता किया है। यूट्यूब शॉर्ट्स, गूगल की नवीनतम छोटे वीडियो वाली सेवा है, जिसके जरिए उपयोगकर्ता और कलाकार छोटी अवधि के वीडियो कंटेंट तैयार कर सकते हैं। टिप्स ने कहा कि इस सौदे के तहत, टिप्स अपने बड़े संगीत भंडार का यूट्यूब प्लेटफॉर्म को लाइसेंस देगा, जिससे दुनिया भर में विशाल भारतीय समुदाय अपने लोकप्रिय और सुपरहिट संगीत के प्रेरित कंटेंट बना सकेंगे। टिप्स इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक कुमार तौरानी ने कहा कि इस साझेदारी से रचनाकारों और उपयोगकर्ताओं के लिए रचनात्मकता की नई संभावनाएं तैयार होंगी। पिछले साल दिसंबर में टिप्स इंडस्ट्रीज ने फेसबुक के साथ ऐसे ही एक वैश्विक सौदे की घोषणा की थी।

हैप्पीएस्ट माइंड को 36 करोड़ का मुनाफा

नई दिल्ली। आईटी कंपनी हैप्पीएस्ट माइंड टेक्नोलॉजीज लिमिटेड ने बताया कि मार्च 2021 तिमाही में उसका संचयी मुनाफा कई गुना बढ़कर 36.05 करोड़ रुपए हो गया। पिछले साल बीएसई और एनएसई में सूचीबद्ध होने वाली कंपनी ने एक साल पहले की समान अवधि में 5.30 करोड़ रुपए का मुनाफा हासिल किया था। कंपनी ने शेयर बाजार को बताया कि समीक्षाधीन तिमाही में उसकी आय 220.71 करोड़ रुपये रही, जो एक साल पहले की समान अवधि के 186.35 करोड़ रुपये के मुकाबले 18.4 प्रतिशत अधिक है। हैप्पीएस्ट ने कहा कि वित्त वर्ष 2020-21 की सबसे उल्लेखनीय बात हमारा सफल आईपीओ था। वित्त वर्ष 2021-22 में हम कारोबार में 20 प्रतिशत वृद्धि हासिल करने की कोशिश करेंगे, जैसा कि आईपीओ के समय जिक्र किया गया था।

PM kisan Yojana: पीएम मोदी 9.5 करोड़ किसानों के खाते में डालेंगे 19,000 करोड़ रुपये

(एजेंसी)।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आगामी 14 मई को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) योजना की आठवीं किस्त के रूप में 9.5 करोड़ लाभार्थी किसान परिवारों के लिए 19,000 करोड़ रुपये की राशि जारी करेंगे। प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर से जारी एक बयान में कहा गया है कि प्रधानमंत्री वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से आयोजित एक कार्यक्रम में पीएम-किसान सम्मान निधि की राशि जारी करेंगे और लाभार्थियों से संवाद भी करेंगे।

लाभार्थियों से संवाद भी करेंगे पीएम मोदी

इस अवसर पर केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर भी उपस्थित रहेंगे। बयान में कहा गया, ''इस दौरान 9.5 करोड़ से अधिक किसान परिवारों के खातों में 19,000 करोड़ रुपये से अधिक की राशि हस्तांतरित की जाएगी। ज्ञात हो कि इस योजना के अंतर्गत, कुछ अपवादों को छोड़कर, जोत वाले किसान परिवारों की आय में 6,000 रूपये की सालाना सहायता प्रदान की जाती है।

चार महीने पर दी जाती है तीन किस्तें

इस योजना के तहत हर चार महीने पर 2,000-2,000 रूपये की तीन किस्तें प्रदान की जाती हैं। यह धनराशि डीबीटी माध्यम से लाभार्थियों के बैंक खातों में सीधे जमा कराई जाती है। अब तक इस योजना के तहत, 1.15 लाख करोड़ रुपये किसान परिवारों के खातों में हस्तांरित किए जा चुके हैं।

सन फाउंडेशन ने पंजाब को 200 ऑक्सीजन कंसन्ट्रेटर दिए

नयी दिल्ली, सन फाउंडेशन ने पंजाब में कोविड-19 संक्रमण के बढ़ते मामलों से निपटने के लिए राज्य को 200 ऑक्सीजन कंसन्ट्रेटर दान में दिए हैं। फाउंडेशन के चैयरमैन विक्रमजीत साहनी ने बुधवार को कहा कि जरूरतमंद और गरीब मरीजों के इस्तेमाल के लिए संबंधित उपायुक्तों को कंसन्ट्रेटर दान में दिए जा रहे हैं। उन्होंने एक बयान में कहा, हमने पंजाब को लुधियाना, अमृतसर, जालंधर, पटियाला, बठिंडा और होशियारपुर जैसे सबसे ज्यादा प्रभावित जिलों के लिए 200 अतिरिक्त ऑक्सीजन कंसन्ट्रेटर दान में दिए हैं। साहनी ने बताया कि इसके अलावा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमिटी (एसजीपीसी) को 100 तथा दिल्ली में विभिन्न अस्पतालों एवं कोविड देखभाल केंद्रों को 500 ऑक्सीजन कंसन्ट्रेटर दान में दिए गए हैं।

अप्रैल में 4जी डाउनलोडिंग स्पीड में जियो सबसे ऊपर, अपलोड में वोडाफोन निकली आगे

नेशनल डेस्क। दूरसंचार नियामक ट्राई के नवीनतम आंकड़े के मुताबिक अप्रैल में 20.1 मेगाबिट प्रति सेकेंड (एमबीपीएस) की डेटा डाउनलोड रेट के साथ रिलाइंस जियो 4जी रफ्तार की सूची में शीर्ष पर रही, जबकि 6.7 एमबीपीएस की अपलोड रफ्तार के साथ वोडाफोन अपलोड रेट में सबसे आगे थी। निकटतम प्रतिद्वंदी वोडाफोन की तुलना में जियो की डाउनलोड की रफ्तार तीन गुना ज्यादा थी। हालांकि वोडफोन और आइडिया सेल्लुयलर ने अपने मोबाइल कारोबार का वोडाफोन आइडिया लिमिटेड के रुप में विलय कर लिया है, भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (ट्राई) दोनों ही इकाइयों के नेटवर्क रफ्तार का अलग-अलग आंकड़ा जारी करती है। ट्राई द्वारा 11 मई को डाले गए नये आंकड़े के मुताबिक अप्रैल में वोडाफोन की डाउनलोड की रफ्तार सात एमबीपीएस थी। इसके बाद आइडिया और भारती एयरटेल की डाउनलोड की रफ्तार क्रमशः 5.8 और पांच एमबीपीएस थी। अपलोड वर्ग में 6.7 एमबीपीएस की रफ्तार के साथ वोडाफोन पहले, 6.1 एमबीपीएस के साथ आइडिया दूसरे, 4.2 एमबीपीएस के साथ जियो तीसरे और 3.9 एमबीपीएस रफ्तार के साथ एयरटेल चौथे स्थान पर थी। आपको बता दें कि डाउनलोड की रफ्तार से उपभोक्ताओं को इंटरनेट से सामग्री हासिल करने में मदद मिलती है जबकि अपलोड की रफ्तार उन्हें अपने संपर्कों को तस्वीरें या वीडियो भेजने या साझा करने में मदद मिलती है। ट्राई रियल-टाइम के आधार पर अपने माईस्पीड ऐप्लिकेशन की मदद से देश भर से जुटाए जाने वाले आंकड़े के हिसाब से औसत रफ्तार की गणना करता है।

वर्क फ्रॉम होम के दौरान विश्व स्तर पर हैकिंग में भारी वृद्धि देखी गई : रिपोर्ट

न्यूयॉर्क (एजेंसी)।

कोरोनावायरस महामारी के कारण घर से काम (वर्क फ्रॉम होम) करने वाले ज्यादातर लोगों के साथ साइबर अपराध में वृद्धि हुई है।

गुरुवार को जारी एक रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2021 में दुनिया भर में 5,258 डेटा उल्लंघन दर्ज किए गए, जो पिछले साल की तुलना में अधिक है। अमेरिका-आधारित वेरिजॉन बिजनेस द्वारा डेटा ब्रीच इन्वेस्टिगेशंस रिपोर्ट (2021 डीबीआईआर) के 14वें संस्करण में कुल 29,207 सुरक्षा संबंधी घटनाओं का विश्लेषण किया गया। इस दौरान 88 देशों, 12 उद्योगों और तीन विश्व क्षेत्रों में फैले पीड़ितों के साथ 83 योगदानकताओं द्वारा एकत्र डेटा का उपयोग किया गया। रिपोर्ट से पता चला कि अभूतपूर्व रूप से काम करने वाले लोगों की संख्या में क्रमशः फिशिंग और रैंसमवेयर के हमलों में क्रमशः11 प्रतिशत और 6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकि पिछले साल की तुलना में मिसरिप्रजेंटेशन के मामलों में 15 गुना की वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त डेटा से पता चला है कि 61 प्रतिशत उल्लंघनों में क्रेडेंशियल डेटा शामिल

रहे हैं। क्रेडेंशियल स्टफिंग हमलों से पीड़ित लगभग 95 प्रतिशत संगठनों ने वर्ष के दौरान 637 और 3.3 अरब दुर्भावनापूर्ण लॉगिन प्रयासों का सामना किया। वेरिजॉन बिजनेस के सीईओ टैमी इरविन ने एक बयान में कहा, कोविड-19 महामारी का वर्तमान में कई सुरक्षा चुनौतियों का सामना कर रहे संगठनों पर गहरा असर पड़ा है। इरविन ने कहा कि जिस तरह से बिजनेस-क्रिटिकल फंक्शन को क्लाउड पर स्विच करने वाली कंपनियों की संख्या बढ़ती है, उनके संचालन के लिए संभावित खतरा अधिक स्पष्ट हो सकता है, क्योंकि सुरक्षा में सेंधमारी करने वाले हेकर्स मानवीय कमजोरियों का फायदा उठाने और डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्च र पर बढ़ती निर्भरता का लाभ उठाते हुए प्रतीत होते हैं।

रेडमी नोट 10-एस के साथ ही भारत में लॉन्च हुई नई स्मार्टवॉच

बेंगलुरू (एजेंसी)।

मी इंडिया के एक सब-ब्रांड रेडमी इंडिया ने गुरुवार को भारतीय बाजार में अपनी पहली रेडमी वॉच के साथ रेडमी नोट 10 एस का अनावरण किया। स्मार्टफोन दो स्टोरेज वेरिएंट्स में पेश किया गया है। इसके 6 जीबी प्लस 64 जीबी स्टोरेज वाले वेरिएंट की कीमत 14,999 रुपये रखी गई है, जबकि 6 जीबी प्लस 128 जीबी की कीमत 15,999 रुपये निर्धारित की गई है। यह 18 मई से ऑनलाइन चैनलों पर उपलब्ध होगा। रेडमी नोट 10 एस एक स्लीक डिजाइन, स्टनिंग कैमरा, बेहतरीन परफॉर्मेंस और स्मूथ डिस्प्ले के साथ बाजार में उतारा गया है। कंपनी ने एक बयान में कहा है कि यह एमआईयूआई 12.5 (अंतरिम) आउट-ऑफ-द-बॉक्स के साथ आने वाला पहला डिवाइस होगा, जो अब तक का सबसे साफ एमआईयूआई अनुभव होगा। 6.43 इंच का फुल एचडी प्लस सुपर एएमओएलईडी डिस्प्ले वाला स्मार्टफोन क्वाड-कैमरा सेटअप के साथ आता है, जिसमें 64 मेगापिक्सल प्राइमरी कैमरा, 8 मेगापिक्सल अल्ट्रा-वाइड लेंस, 2 गुणा जूम क्षमता के साथ 2 मेगापिक्सल मैक्रो कैमरा और 2 मेगापिक्सल डेप्थ सेंसर दिया गया है।बेहतरीन सेल्फी के लिए इसमें 13 मेगापिक्सल का फंट-इन-डिस्प्ले कैमरा भी दिया गया है। कंपनी का कहना है कि रेडमी नोट 10एस एक मीडियाटेक हेलियो जी95 चिपसेट द्वारा संचालित है, जो कि शानदार गेमिंग अनुभव के लिए बनाया गया है। वहीं 3,999 रुपये की कीमत पर पेश की गई रेडमी वॉच यूजर्स को वर्कआउट के दौरान अपने गति, दूरी और कैलोरी को ठीक से ट्रैक करने की अनुमति देती है। यह एक साथ वर्कआउट सेशन (कसरत सत्र) के लिए एक स्पष्ट और विस्तृत स्थिति प्रदान करने के लिए हृदय गति को लेकर भी निगरानी रखती है। स्मार्टवॉच में 11 पेशेवर स्पोर्ट्स मोड जैसे कि क्रिकेट, वॉकिंग, साइकलिंग, ट्रेकिंग, आउटडोर रनिंग, ट्रेडमिल,

पूल स्विमिंग, फ्रीस्टाइल आदि पेश किए गए हैं, जो वास्तविक समय में गतिविधि का ट्रैक स्वचालित रूप से रखते हैं।इसके अलावा, यह उन्नत स्वास्थ्य सुविधाओं के साथ पेशेवर स्तर की स्वास्थ्य निगरानी प्रदान करती है, जैसे कि हृदय गति की निगरानी, नींद की निगरानी और निर्देशित श्वास आदि। इससे यूजर्स अपनी स्वास्थ्य स्थिति पर आसानी से नजर रख सकते हैं। यह 25 मई से मी डॉट कॉम, फ्लिपकार्ट, मी होम्स और मी स्टूडियोज पर उपलब्ध होगी।

टेस्ला ने बिटकॉइन से वाहन खरीद पर रोक लगाई

सैन फ्रांसिस्को।

बिटकॉइन पर दो महीने से भी कम समय में तेजी का रूख अखितयार करने के बाद टेस्ला ने गुरुवार को पर्यावरणीय नुकसान का हवाला देते हुए अपने इलेक्ट्रिक वाहनों को खरीदने के लिए भुगतान मोड के रूप में लोकप्रिय क्रिप्टोकरेंसी पर ब्रेक लगा दिया है। बुधवार को ट्वीट में एलन मस्क ने कहा कि टेस्ला कोई बिटकॉइन नहीं बेचेगी। इसके साथ इलेक्ट्रिक वाहनों को खरीदने के लिए बिक्काइन स्वीकार करेगी। मस्क ने लिखा है, बिटकॉइन और दूसरी क्रिप्टोकरेंसी के यूज पर भी हम विचार कर रहे हैं।

एमएसएन लैब्स ने दवा लॉन्च करने को लिली के साथ किया करार

हैदराबाद (एजेंसी)।

एमएसएन लैब्स ने गुरुवार को घोषणा की कि उसने भारत में कोविड के लिए बारीसिटीनिब दवा के निर्माण और विपणन के लिए अमेरिका की कंपनी एली लिली के साथ रॉयल्टी मुक्त, गैर-विशिष्ट, स्वैच्छिक लाइसेंस समझौता किया है। बारीसिटीनिब दवा को केंद्रीय ड्रग्स मानक नियंत्रण संगठन द्वारा भारत में प्रतिबंधित आपातकालीन उपयोग की अनुमति दी गई है। इसका आपातकालीन उपयोग रेमडेसिविर के साथ संदिग्ध मरीजों या अस्पताल में भर्ती उन वयस्क कोविड-19 मरीजों के लिए किया जाएगा, जिन्हें पूरक ऑक्सीजन, यांत्रिक वेंटिलेशन या एक्स्ट्राकोर्पोरियल मेम्ब्रेन ऑक्सीजनेशन (ईसीएमओ) की जरूरत पड़ती है। एमएसएन ग्रुप के सीएमडी डॉ. एमएसएन रेड्डी ने कहा, एली लिली एंड कंपनी के साथ यह करार कोविड -19 के खिलाफ भारत की लड़ाई में एक मील का पत्थर है। एमएसएन बारीडोज ब्रांड नाम से 2 एमजी और 4 एमजी ताकत वाले इस उत्पाद का निर्माण शुरू करेगा।

एमएसएन ने अपने यहां के आरएंडडी और विनिर्माण इकाइयों में सक्रिय फार्मास्युटिकल अवयव और बारीसिटीनिब के निर्माण की तकनीक विकसित की है। एमएसएन कोविड उपचार रेंज के हिस्से के रूप में, पहले ही 200, 400 और 800 एमजी ताकत में फैविलो (फैविपाइरैविर) और 75 एमजी ताकत वाला ओसेलो (ओसेल्टैमिविर) कैप्सूल लॉन्च कर चुकी है।

आईआईएमए अहमदाबाद के निदेशक ने 56वें वार्षिक दीक्षांत समारोह में कहा : सिर्फ और सिर्फ निष्पक्ष रहना

अहमदाबाद (एजेंसी)।

दुनियाभर में विख्यात देश का सबसे पुराना प्रबंधन संस्थान इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट अहमदाबाद (आईआईएमए) ने अपना 56वें वार्षिक दीक्षांत समारोह आयोजित किया, जो इसका पहला वर्चुअल दीक्षांत समारोह भी था। समारोह में छात्रों ने वफादारी, समूहों, संगठनों, उद्योगों और यहां तक कि सेनाओं में भी वफादारी और इसके बहुआयामी तत्वों के बारे में गहन जानकारी हासिल की।अपने समृद्ध जीवन के अनुभवों के बारे में बताते हुए आईआईएमए के निदेशक, प्रो एरोल डिसूजा ने युवा प्रबंधन अधिकारियों की वर्चुअल सभा को शिक्षित करने के लिए मंच का इस्तेमाल किया । उन्होंने छात्रों को समाज की भलाई को लिए अपने मजबूत भावनाओं का इस्तेमाल करते हुए उनमें जोश भर दिया। उन्होंने भविष्य के नेताओं से आग्रह किया, जो कॉर्पोरेट जगत और नई संस्कृतियों का निर्माण करने के लिए तैयार थे। उन्होंने कहा कि सही और गलत, नैतिक और अनैतिक के बीच अंतर करना आवश्यक है। प्रो एरोल डिसूजा ने अपने छात्रों को नैतिकता के आधार पर हल खोजने की आवश्यकता पर जोर दिया, क्योंकि अंत में यह सब न्यायपूर्ण और निष्पक्ष होने का दावा करता है। अपने व्यक्तिगत और सामान्य जीवन के अनुभवों को याद करते हुए, उन्होंने अपने छात्रों से कहा, भले ही संस्था द्वारा निर्धारित नियम कुछ भी बाधाएं पेश करें लेकिन उनको अपने नैतिकता के आधार पर सिर्फ और सिर्फ सही रास्ता चुनना चाहिए। उन्होंने कहा, किसी संगठन या समूह के प्रति वफादारी के बंधन व्यक्तियों को हर तरह से एक-दूसरे का समर्थन करने की मांग करते हैं। कार्यस्थल में पहचान अक्सर कर्मचारियों को परिभाषित करने में मदद करती है और समझती है कि वे कौन हैं और यदि उन्हें विश्वास है कि वहां है। अपने मूल्यों और संगठन के मूल्यों के बीच एकरूपता के जरिये पहचान की एक मजबूत भावना विकसित करते हैं और संगठन का हिस्सा बनने के लिए गर्व का अनुभव करते हैं। अपने कर्मचारियों के प्रति सकारात्मक व्यवहार प्रदर्शित करने वाले संगठनों में अक्सर ऐसे कर्मचारी होते हैं जो उच्च स्तर की प्रतिबद्धता और उनके प्रति भावनात्मक लगाव प्रकट करते हैं। एक संगठन और उच्च प्रतिबद्धता के साथ दोनों की पहचान, निष्ठा और संगठनों का पोषण करती है, जो वफादारी का पोषण करते हैं, जिसमें ईमानदारी और परोपकार जैसे संबद्ध मूल्य होते हैं।

कोरोना के कारण भारतीय स्मार्टफोन बाजार में 1.2 करोड़ यूनिट की गिरावट का अनुमान

नई दिल्ली।

भारत में मौजूदा कोविड लहर ने स्मार्टफोन दिग्गजों को प्रभावित किया है और बाजार में लगभग 1.2 करोड़ यूनिट की गिरावट देखने को मिल सकती है। एक नई रिपोर्ट में गुरुवार को पूवार्नुमान लगाया गया है कि कोरोना संकट के कारण साल भर के दौरान स्मार्टफोन बाजार 18.2 करोड़ यूनिट से 17 करोड़ यूनिट पर खिसक जाएगा। काउंटरप्वाइंट रिसर्च के अनुसार, भारत का स्मार्टफोन बाजार निश्चित रूप से जारी दूसरी तिमाही (अप्रैल-जून अवधि) में 30 प्रतिशत से अधिक की महत्वपूर्ण गिरावट का गवाह बनेगा। हालांकि इसके बाद त्योहारी सीजन के समय बाजार में रिकवरी के साथ तीसरी और चौथी तिमाही में कुछ सुधार होने की उम्मीद भी है। रिपोर्ट में उपभोक्ताओं की ओर से कोविड-19 संक्रमण के कारण स्मार्टफोन खरीदने के लिए ऑनलाइन चैनल अधिक पसंद करने की ओर भी इशारा किया गया है। भारत की स्मार्टफोन शिपमेंट पहली तिमाही में 23 प्रतिशत (वार्षिक आधार पर) बढ़ी और 3.8 करोड़ यूनिट तक पहुंच गई। रिपोर्ट में कहा गया है, वर्तमान कोविड-19 लहर का आने वाली तिमाहियों पर प्रभाव पडेगा, जिसमें 2021 की दूसरी तिमाही सबसे अधिक प्रभावित होगी। हमने पिछले पूवार्नुमान की तुलना में 2021 की अपनी दूसरी तिमाही के पूवार्नुमान में 30 प्रतिशत से अधिक की कटौती की है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि बाजार में अनिश्चितता की स्थिति जून या जुलाई तक कायम रहेगी, मगर इसके बाद त्योहारी सीजन के दौरान और तीसरी तिमाही के अंत से लेकर चौथी तिमाही में स्मार्टफोन बाजार वापसी करेगा। कोविड मामलों में वृद्धि और विभिन्न राज्यों में प्रतिबंध/लॉकडाउन के कारण अप्रैल (और अब मई) में स्मार्टफोन की मांग पहले से ही प्रभावित हुई है। कुल मिलाकर भारतीय स्मार्टफोन बाजार 2021 में 17 करोड़ यूनिट तक पहुंचने की संभावना है, जिसमें 12 प्रतिशत (वर्ष दर वर्ष) वृद्धि की उम्मीद है। रिपोर्ट में कहा गया है कि 2021 में 5जी डिवाइस का बाजार 8 गुना बढ़कर 2021 में 3.1 करोड़ यूनिट तक पहुंच जाएगा, जो समग्र बाजार का 18 प्रतिशत हिस्सा होगा। पिछले छह महीनों में एंट्री-लेवल 5 जी डिवाइस की कीमत में 40 प्रतिशत की कमी आई है और 5 जी के साथ सबसे किफायती फोन की कीमत लगभग 15,000 हो गई है।

कोविड के बावजूद एनसीआर, मुंबई में प्राइम ऑफिस स्पेस का किराया स्थिर

मुंबई (एजेंसी)।

दिल्ली-एनसीआर, मुंबई और बेंगलुरु के प्रमुख शहरों में मुख्य इलाकों में कार्यालय की जगह का किराया कोविड संकट के बावजूद अगले 12 महीनों में स्थिर रहने की उम्मीद है। ये दावा नाइट फ्रैंक की एक रिपोर्ट में किया गया है। एशिया-पैसिफिक प्राइम ऑफिस रेंटल इंडेक्स क्यूसी 2021 ने कहा कि मुंबई में बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स ने जनवरी-मार्च 2021 तिमाही के दौरान कार्यालय किराए में 0.8 प्रतिशत क्यूओक्यू की सार्थक वसूली देखी, जबकि यह पिछली तिमाही -5.5 प्रतिशत थी। रिपोर्ट में कहा गया है कि इस मजबूत वसूली को वित्तीय वर्ष 2021 की पहली तिमाही अवधि में बेहतर लेनदेन गतिविधि के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। नाइट फ्रैंक ने अनुमान लगाया है कि इस वर्ष किराए में गिरावट कम होगी। कुल मिलाकर कुल मिलाकर एपीएमसी क्षेत्र में 3 प्रतिशत की गिरावट की संभावना है, जबकि 2020 में यह 4.8 प्रतिशत की गिरावट थी। बेंगलुरु के सेंट्रल बिजनेस डिस्ट्रिक्ट में एमजी रोड, इन्फैंट्री रोड और रेजीडेंसी रोड जैसे क्षेत्र शामिल हैं। पिछले साल की चौथी तिमाही में 4.0 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई जबकि साल 2021 की पहली तिमाही में 3.0 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) के कनॉट प्लेस में, कार्यालय किराए में साल 2021 के पहली तिमाही में क्यूओक्यू मूल्य में 0.0 प्रतिशत का एक फ्लैट परिवर्तन देखा गया, जबकि पिछले साल 2020 की चौथी तिमाही में यह -1.0 प्रतिशत था। सूचकांक के अनुसार, ताइपे एकमात्र शहर है जिसे अगले 12 महीनों में एपीएसी क्षेत्र में कार्यालय किराये मूल्यों में वृद्धि की उम्मीद है। सूचकांक द्वारा ट्रैक किए गए 22 शहरों में से आठ ने पिछली तिमाही में 10 की तुलना में पिछली तिमाही में स्थिर या बढ़े हुए किराए दर्ज किए। क्यू 1, 2021 के लिए, नाइट फ्रैंक के एशियापेसिफिक प्राइम ऑफिस रेंटल इंडेक्स में -1.2 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई.

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सेरेना विलियम्स को कैरियर के 1000वें मैच में मिली हार

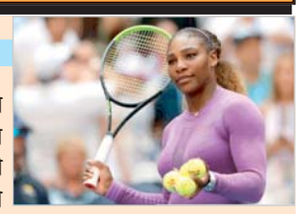

रोम । सेरेना विलियम्स को कैरियर के 1000वें टूर मैच में पराजय का सामना करना पड़ा जिसे इटालियन ओपन टेनिस के दूसरे दौर में नादिया पोडोरोस्का ने 7-6, 7-5 से हराया। चार बार की चैम्पियन आठवीं वरीयता प्राप्त सेरेना ने आस्ट्रेलियाई ओपन के बाद से टेनिस नहीं खेला है। उसे करीब दो घंटे तक चले मैच में अर्जेंटीना की खिलाड़ी ने हराया। सेरेना ने हार के बाद कहा कि क्लेकोर्ट पर पहला मैच कठिन होता है। शायद कुछ और मैचों की जरूरत है। मैं अपने कोच और टीम से बात करके देखूंगी कि क्या हो सकता है। गत चैम्पियन सिमोना हालेप को दुनिया की पूर्व नंबर एक खिलाड़ी एंजेलिक कर्बर के खिलाफ चोट के कारण मैच छोडना पड़ा। वह उस समय 6-1, 6-1 से आगे थी। दूसरी वरीयता प्राप्त नाओमी ओसाका को अमेरिका की जेसिका पेगुला ने 7-6, 6-2 से हराया। वहीं चौथी वरीयता प्राप्त सोफिया केनिन को बारबोरा के ने 6-1, 6-4 से मात दी। शीर्ष वरीयता प्राप्त एशले बार्टी और पूर्व चैम्पियन कैरोलिना प्लिसकोवा अगले दौर में पहुंच गई। पुरूष वर्गमें रफेल नडाल ने स्थानीय युवा जानिक सिनेर को 7-5, 6-4 से हराया। वहीं रूस के तीसरी वरीयता प्राप्त दानिल मेदवेदेव हमवतन असलान कारात्सेव से 2-6, 6-6 से हार गए।

मां को कोविड संक्रमण के कारण क्वालीफाइंग प्रतियोगिता में नहीं खेलना चाहती थी तलवारबाज भवानी

नयी दिल्ली (एजेंसी)।

ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर चुकी तलवारबाज भवानी देवी ने बुधवार को खुलासा किया कि में क्वालीफाइंग टूर्नामेंट के दौरान वह कोरोना वायरस से जूझ रही अपनी मां को छोड़कर जाने की दुविधा से जूझ रही थी। भवानी ने कहा कि वह मार्च में क्वालीफाइंग टूर्नामेंट से बाहर रहना चाहती थी लेकिन अस्पताल में भर्ती उनकी मां ने उन्हें प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए कहा। इटली में ट्रेनिंग कर रही भवानी ने कहा- बुडापेस्ट क्वालीफिकेशन से पहले मेरी मां अस्पताल में भर्ती थी, वह कोविड पॉजिटिव पाई गई थी और उन्हें दो महीने के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। मैं असल में प्रतियोगिता के लिए नहीं जाने के बारे में सोचा था। उन्होंने कहा- मैं उनके पास जाना चाहती थी लेकिन मेरी मां ने अस्पताल के बेड से मुझे कहा 'चिंता मत करो, मैं ठीक हूं, मैं सक्रिय हूं, मुझे सिर्फ कुछ आराम की जरूरत है और मैं जल्द ही घर वापस आ जाऊंगी, बस अपने खेल पर ध्यान लगाओ'। भवानी ने मार्च में हंगरी में विश्व कप के दौरान ओलंपिक कोटा हासिल किया। उन्होंने एडजस्टेड आफिशियल रैंकिंग (एओआर) प्रणाली के जरिए क्वालीफाई किया। वह ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने वाली पहली भारतीय तलवारबाज हैं। 27 साल की 'सेबर तलवारबाज' ने ओलंपिक से पहले किसी प्रतियोगिता में हिस्सा लेने की योजना नहीं बनाई है लेकिन वह अपनी ट्रेनिंग से खुश हैं। भवानी ने कहा- फिलहाल, हमारी ओलंपिक से पहले किसी प्रतियोगिता में हिस्सा लेने की योजना नहीं है क्योंकि लगभग सभी प्रतियोगिताएं रद्द हो गई हैं। एशियाई चैंपियनशि है लेकिन इसे भी रद्द होने की संभावना है। भवानी ने कहा कि उनके अगले हफ्ते रोम में कोविड-19 टीका लगवाने की उम्मीद है और साथ ही उनके तोक्यो खेलों से पहले भारत आने की संभावना भी नहीं है। उन्होंने कहा- साइ और मेरे महासंघ ने इतालवी महासंघ से आग्रह किया है। रोम में भारतीय दूतावास भी मुझे इटली में टीका लगवाने में मदद करने का प्रयास कर रहा है। इस तलवारबाज ने कहा, ''संभवतः अगले हफ्ते मुझे टीका लग जाएगा। मैं साइ और रोम में भारतीय दूतावास और भारतीय तलवारबाजी संघ की आभारी हूं कि वे यहां टीकाकरण में मेरी मदद कर रहे हैं।

यह पूछने पर कि क्या वह ओलंपिक से पहले भारत लौटेंगे, भवानी से कहा- मैं तय नहीं हूं कि ओलंपिक से पहले भारत लौटूंगी। संभवतः यहां से सीधे तोक्यो जाऊंगी।

राजस्थान रॉयल्स के टीम मालिक ने दिया बयान, कहा- IPL दोबारा करवाना बड़ी चुनौती

नई दिल्ली (एजेंसी) ।

राजस्थान रॉयल्स के मालिक मनोज बादले ने कहा कि निलंबित इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) का दोबारा कार्यक्रम तैयार करना वास्तविक चुनौती होगी और इसके इस साल टी20 विश्व कप से पहले या बाद में आयोजित किये जाने की धुंधली संभावना है। आईपीएल के जैव सुरक्षित वातावरण में कुछ खिलाड़ियों के कोविड-19 के लिये पॉजिटिव पाये जाने के बाद यह टी20 टूर्नामेंट स्थगित कर दिया गया था। बादले ने कहा कि मुझे लगता है कि चुनौती इसके लिए उपयुक्त समय ढूंढना है। खिलाड़ी पहले ही बहुत अधिक क्रिकेट खेल रहे हैं। कोविड के कारण इस साल कार्यक्रम काफी व्यस्त है। विश्व भर के क्रिकेट बोर्ड अधिक से अधिक प्रतियोगिताएं और टेस्ट मैचों का आयोजन करना चाहते हैं। इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) के क्रिकेट निदेशक एशले जाइल्स पहले ही साफ कर चुके हैं कि लीग के फिर से शुरू होने पर उनके शीर्ष खिलाड़ी इसमें नहीं खेल पाएंगे क्योंकि उनकी टीम को सितंबर और अक्टूबर में बांग्लादेश और पाकिस्तान का दौरा करना है। यही नहीं टी20 विश्व कप के बाद उन्हें आस्ट्रेलिया के खिलाफ एशेज श्रृंखला खेलनी है। बादले ने कहा कि लीग को ब्रिटेन या मध्य पूर्व में आयोजित किए जाने की संभावना है। उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि यह वास्तविक चुनौती है। संभावनाएं भी हैं। इसकी सितंबर में ब्रिटेन या टी20 विश्व कप से पहले या बाद में मध्य पूर्व में आयोजन की धुंधली संभावना है, लेकिन मुझे लगता है कि यह वास्तविक चुनौती बनने जा रही है।

CSK के खिलाफ आतिशी पारी नहीं बल्कि यह काम करके ज्यादा खुश था : पोलार्ड

मुंबई । तीन बार की आईपीएल विजेता चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के खिलाफ एक मई को दिल्ली में आईपीएल 2021 के 27वें मुकाबले में शानदार ऑलराउंड प्रदर्शन करने वाले मुंबई इंडियंस (एमआई) के स्टार ऑलराउंडर कीरोन पोलार्ड ने कहा है कि चेन्नई के खिलाफ मैच में वह बल्ले से अपनी आतिशी पारी की बजाय गेंदबाजी में लिए दो विकेटों से ज्यादा खुश थे। मुंबई इंडियंस ने सोशल मीडिया पर पोलार्ड का एक वीडियो साझा किया है, जिसमें पोलार्ड ने अपने इस प्रदर्शन पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा- किसी को क्रीज पर खड़े रहने की जरुरत थी। मेरे लिए वो काफी अच्छा दिन था, क्योंकि मैंने उस दिन ऑलराउंड प्रदर्शन किया था। इतने सारे रन बनाने के बावजूद मुझे लगता है कि मैं गेंदबाजी में मोईन अली और फाफ डू प्लेसी के विकेटों से ज्यादा प्रभावित हुआ था। मैं सिर्फ टीम को जिताने के बारे में सोचता हूं और जो जरूरी होता है वही करता हूं। उल्लेखनीय है कि चेन्नई ने पहले बल्लेबाजी करते हुए शानदार शुरुआत की थी। मोईन अली और फाफ डू प्लेसी की जोड़ी ने 100 से ज्यादा रनों की साझेदारी कर दी थी और कोई भी गेंदबाज उनकी साझेदारी को तोड़ नहीं पा रहा था। इस बीच पोलार्ड ने गेंद पकड़ी और दो ओवरों में दोनों बल्लेबाजों को आउट करके पवेलियन भेज दिया था। इसके बाद पोलार्ड ने ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करते हुए 34 गेंदों पर नाबाद 87 रन की पारी खेल कर मुंबई को रोमांचक जीत दिलाई थी। उनकी इस पारी की बदौलत मुंबई ने आईपीएल इतिहास का दूसरा सबसे बड़ा लक्ष्य हासिल किया था।

शेफाली वर्मा समेत दो अन्य खिलाड़ी बिग बैश के लिए तैयार, इस टीम के लिए खेल सकती हैं

नई दिल्ली (एजेंसी) ।

भारतीय बल्लेबाजी सनसनी शेफाली वर्मा महिला बिग बैश लीग (डब्ल्यूबीबीएल) में दो बार की चैम्पियन सिडनी सिक्सर्स की ओर से पदार्पण करने को तैयार है। इस 17 साल की विस्फोटक बल्लेबाज के साथ वामहस्त स्पिनर राधा यादव से भी सिडनी सिक्सर्स फ्रेंचाइजी की बात-चीत जारी है। बीसीसीआई के एक सूत्र बताया कि शेफाली का करार हो गया है, डब्ल्यूबीबीएल के कार्यक्रम को जारी करते समय इसकी घोषणा की जाएगी। उन्होंने बताया कि राधा से सिडनी सिक्सर्स की बातचीत जारी है। शेफाली अभी नाबालिग है इसलिए लीग में खेलने के लिए उनके पिता को सहमति पत्र पर हस्ताक्षर करने की जरूरत होगी। शेफाली के अलावा इस लीग से भारतीय टी20 कप्तान हरमनप्रीत कौर (सिडनी थंडर) सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना (ब्रिसबेन हीट) और हरफनमौला वेदा कृष्णामूर्ति (होबार्ट हरिकेन्स) भी जुड़ी हुई है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद की महिला टी20अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में पहले स्थान पर काबिज शेफाली इस साल के अंत में इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) की 100 गेंदों की घरेलू प्रतियोगिता 'द हंड्रेड' के पहले सत्र में बर्मिंघम फीनिक्स का प्रतिनिधित्व करेंगी। द हंड्रेड को पिछले साल कोविड-19 महामारी के कारण रद्द कर दिया गया था। इस साल इसका आयोजन 21 जुलाई से होगा। शेफाली के लिए द हंड्रेड छोटे प्रारूप में पहला विदेशी टूर्नामेंट होगा। उन्होंने 22 अंतरराष्ट्रीय मैचों में 148.31 के प्रभावशाली स्ट्राइकरेट के साथ 617 रन बनाए है।

संक्षिप्त समाचार

कर्ण शर्मा कोविड के खिलाफ मदद के लिए आगे आए, गौतम गंभीर फाउंडेशन में दिए इतने रूपए

मेरठ । भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाड़ी रहे और वर्तमान में आईपीएल और रेलवे टीम से खेल रहे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर कर्ण शर्मा ने कोविड के खिलाफ संघर्ष में मदद के तौर पर पांच लाख रुपए प्रदान किए हैं। कर्ण ने यह धनराशि कोविड पीड़ितों की मदद के लिए कार्य कर रही गौतम गंभीर फाउंडेशन को दिए हैं। उन्होंने साथ ही लोगों से भी कोरोना महामारी के दौरान एक दूसरे की मदद की अपील की है। उल्लेखनीय है कि वर्तमान में कर्ण शर्मा आइपीएल में चेन्नई सुपर किंग्स की तरफ से खेलते हैं जिसमें इनका पिछला सीजन काफी अच्छा रहा था। हालाकि इन्हें अभी इस सीजन में मौका नहीं मिला, तभी आईपीएल पर भी कोरोना का साया छा गया। आईपीएल बंद होने के बाद मेरठ अपने घर पहुंचे कर्ण शर्मा ने बताया कि महामारी के दौर में हर हाथ थोड़ा-थोड़ा कर आगे बढ़ेंगे तो लोगों की अधिक से अधिक मदद हो सकेगी। इसी सोच के साथ उन्होंने भी इस दिशा में कार्य कर रही क्रिकेट और सांसद गौतम गंभीर की संस्था के कार्यों को आर्थिक योगदान दिया है. आईपीएल बंद होने पर कर्ण शर्मा ने कहा कि जिस तरह संक्रमण खिलाड़ियों में भी बढ़ रहा था उसे देखते हुए जो निर्णय लिया गया है वहीं सबके हित में हैं। खिलाड़ी सुरक्षित रहेंगे तो खेल तो आगे भी हो सकेंगे। आईपीएल के आयोजन को लेकर कर्ण शर्मा ने कहा कि बीसीसीआई फैसला करेगी कि आइपीएल कहां होगा। बीसीसीआई की ओर से भारत में या कहीं और भी मैचों का आयोजन होगा तो सभी खिलाड़ी दोबारा खेलने जरूर जाएंगे। कर्ण ने बताया कि इस पर निर्णय होते ही टीमों और खिलाड़ियों को इसकी जानकारी दी जाएगी। कर्ण शार्मा ने कहा कि वे दोबारा खेलने को लेकर तैयार हैं।

भारतीय टीम के खिलाफ की गलती एशेज में न करे ऑस्ट्रेलियाई टीम : वॉ

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान स्टीव वॉ ने टेस्ट टीम के कप्तान टिम पेन से कहा है कि उस प्रकार की गलती वह एशेज में फिर न दोहराये जो उसने भारतीय टीम के खिलाफ सीरीज में की थी। वॉ ने कहा, भारत के खिलाफ मुकाबले में ऑस्ट्रेलियाई टीम को प्लान बी नहीं होने के कारण हार का सामना करना पड़ा था। उन्होंने पेन की कप्तानी पर कहा कि इंग्लैंड के खिलाफ एशेज सीरीज में उन्हें अपनी समझ पर भरोसा रखना होगा। वॉ ने पेन और उनकी टीम को इंग्लैंड के खिलाफ एशेज सीरीज जीतने के लिए पूरी ताकत लगाने को कहा है। वॉ ने कहा, इन दिनों हम योजनाओं पर खूब जोर देते हैं लेकिन जब वो काम नहीं करतीं तो हमारे पास उसके बैकअप के तौर पर अन्य योजनाएं भी होनी चाहिये। जिससे टीम को लाभ मिल सके। इस पूर्व कप्तान ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया को वैसे आइडिया की जरूरत है, जो टीम इंडिया के खिलाफ सीरीज में नजर नहीं आये थे। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान ने माना कि पिछले 12 महीनों में ऑस्ट्रेलियाई टीम में योजनाओं की कमी साफ नजर आयी है। उन्हें एशेज जीतने टीम को टिप्स भी दिये और कहा कि अगर आपसे सब अच्छा हो रहा है तो कुछ भी कहने की जरूरत नहीं। उसे चलने दें बजाए कि उस पर कुछ और सोचने के। यही मेरी सफलता का मूल मंत्र था। जब हम एशेज सीरीज जीत रहे होते थे तो उसे लेकर ज्यादा बैठकें नहीं करते थे।

रमेश पोवार फिर बने भारतीय महिला क्रिकेट टीम के मुख्य कोच, विवाद के बाद हुए थे टीम से बाहर

(एजेंसी)।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने भारतीय महिला टीम (सीनियर) का हेड कोच के रूप में रमेश पोवार की घोषणा कर दी है। बीसीसीआई ने इस पद के लिए विज्ञापन दिया था और 35 से अधिक आवेदन प्राप्त किए थे जिसमें से 8 का चयन कर उनका इंटरव्यू दिया गया था। लेकिन केट सलाहकार समिति (सीएसी) की सिफारिश के बाद पोवार को फिर से भारतीय महिला क्रिकेट टीम का राष्ट्रीय कोच नियुक्त किया गया। पूर्व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी रह चुके पोवार ने भारत के लिए 2 टेस्ट और 31 वनडे मैच खेले हैं। अपने क्रिकेट करियर के बाद उन्होंने क्रिकेट की कोचिंग दी और ईसीबी लेवल 2 प्रमाणित कोच हैं और बीसीसीआई-एनसीए लेवल 2 कोचिंग पाठ्यक्रम में भी भाग लिया है। पोवार इससे पहले जुलाई-नवंबर 2018 तक भारतीय महिला टीम के कोच रह चुके हैं और भारत ने 2018 में आईसीसी टी20 महिला विश्व कप के सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई किया और लगातार 14 टी20 मैच भी जीते थे। उन्होंने हाल ही में विजय हजारे ट्रॉफी जीतने वाली मुंबई की वरिष्ठ टीम को कोचिंग दी और बॉलिंग कोच के रूप में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी में भी काम किया।

मिताली से हुआ था विवाद के बाद हो गई थी छुट्टी

साल 2018 में रमेश पोवार टीम के कोच थे। वेस्टइंडीज में 2018 में हुए वर्ल्ड टी20 चैंपियनशिप के दौरान इंग्लैंड के खिलाफ सेमीफाइनल मैच में भारतीय टीम की अनुभवी खिलाड़ी मिताली राज को ड्रॉप कर दिया गया था। इस मैच में भारत को 8 विकेट से करारी शिकस्त झेलनी पड़ी थी।

इसके बाद मिताली के साथ उनका विवाद काफी चर्चा में रहे और बाद में पवार को इस पद से हटा दिया गया था।

आईपीएल में खेलने वाले ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी रविवार को लौट सकते हैं स्वदेश

माले (मालदीव)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के स्थगित होने के बाद अभी मालदीव में फंसे आस्ट्रेलिया के क्रिकेटर, प्रशिक्षक और कमेंटेटर विशेष विमान से रविवार को स्वदेश लौट सकते हैं हालांकि उन्हें अब भी अपनी सरकार से इसके लिए पुष्टि की प्रतीक्षा है। आईपीएल 2021 को निलंबित किये जाने के बाद 14 खिलाड़ियों सहित कुल 38 आस्ट्रेलियाई छह मई को मालदीव चले गए थे क्योंकि उनकी सरकार ने भारत में कोविड-19 के बढ़ते मामलों को देखते हुए भारत से 15 मई तक उड़ानों पर प्रतिबंध लगा रखा है। एक रिपोर्ट के अनुसार, 'अभी जो योजना तैयार की जा रही है उसके अनुसार 38 लोगों का समूह रविवार 16 मई को विशेष विमान से मालदीव से मलेशिया होते हुए सिडनी लौट सकता है जहां उन्हें 14 दिन के कड़े पृथकवास पर रहना होगा। इसमें हालांकि कहा गया है कि भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) और क्रिकेट आस्ट्रेलिया को अब भी आस्ट्रेलियाई सरकार से मालदीव में फंसे आस्ट्रेलियाई नागरिकों को 15 मई के बाद स्वदेश लौटने की अनुमति मिलने की प्रतीक्षा है। रिपोर्ट में कहा गया है, 'क्रिकेट आस्ट्रेलियाई, आस्ट्रेलियाई क्रिकेटर्स संघ और बीसीसीआई को आस्ट्रेलियाई सरकार से इसकी पुष्टि की प्रतीक्षा है कि क्या उन लोगों को 15 मई के बाद स्वदेश लौटने की अनुमति दी जाएगी जो हाल तक भारत में थे। चेन्नई सुपर किंग्स के बल्लेबाजी कोच माइक हस्सी कोविड-19 के लिये पॉजिटिव पाये जाने के कारण अभी चेन्नई में पृथकवास पर हैं।

डॉडजी इंटरनेशनल शतरंज - विदित नें पीटर नीलसन को हराया

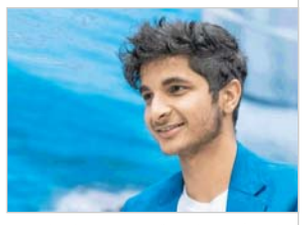

नासिक (निकलेश जैन) भारतीय ओलंपियाड स्वर्ण पदक विजेता टीम के कप्तान ग्रांड मास्टर विदित गुजराती नें दुनिया के 16 दिग्गज खिलाड़ियों के बीच नॉक आउट आधार पर खेली जा रहे डॉडजी इंटरनेशनल शतरंज के प्री क्वाटर फाइनल मुक़ाबले मे डेंकमार्क के पीटर नेल्सन को पराजित करते हुए क्वाटर फाइनल मे प्रवेश कर लिया है । विदित और पीटर के बीच 5 मिनट प्रति खिलाड़ी के कुल 12 मैच होने थे पर विदित नें 11 मैच के बाद ही 6.5-4.5 के स्कोर से मुक़ाबला अपने नाम कर लिया । इस दौरान विदित नें 5 जीत दर्ज की 3 मुक़ाबले ड्रॉ खेले जबकि 3 मे उन्हे हार का सामना करना पड़ा । वही भारत के अधिबन भास्करन रोमांचक मुक़ाबले मे चेक गणराज्य के डेविड नवारा से 4.5-6.5 से हारकर टूर्नामेंट से बाहर हो गए । अन्य परिणामों मे सबसे शानदार प्रदर्शन करते हुए नीदरलैंड के अनीश गिरि नें स्पेन के जोश फर्नांदों को 7-0 से पराजित किया ,रूस के डेनियल डुबोव नें इंग्लैंड के साइमन विलियम को 6.5-0.5 से मात दी । पहले दिन चार प्री क्वाटर फाइनल के बाद आज बचे हुए चार क्वाटर फाइनल मुक़ाबले खेले जाएँगे ।

अभिनव बिंद्रा का बड़ा खुलासा, ओलंपिक में गोल्ड जीतने के बाद छोड़ना चाहते थे निशानेबाजी

नई दिल्ली (एजेंसी) ।

भारत के महानतम ओलंपियन अभिनव बिंद्रा ने कहा कि 2008 में बीजिंग ओलंपिक खेलों में स्वर्ण पदक जीतने के तुरंत बाद उन्हें मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ा था। इतना ही नहीं वह निशानेबाजी भी छोड़ना चाहते थे। बिंद्रा ने बीजिंग में 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा का स्वर्ण पदक जीता था और ओलंपिक में व्यक्तिगत स्वर्ण पदक जीतने वाले एकमात्र भारतीय बने। इस निशानेबाज ने हालांकि जश्न के लम्हे के तुरंत बाद 'खालीपन' महसूस किया। उन्होंने साथ ही कहा कि वह 2008 में स्वर्ण पदक जीतने के बाद निशानेबाजी को अलविदा कहना चाहते थे। यह पूछने कि पर क्या आपने मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना किया? बिंद्रा ने कहा, 'खेल में मेरा लंबा करियर रहा, काफी उतार-चढ़ाव देखे। यह अजीब है कि मेरे जीवन का सबसे बड़ा मानसिक संकट असल में तब आया जब मैंने सफलता हासिल की। काफी लोग विफलता से निपटने के बारे में बात करते हैं लेकिन मेरे लिए सफलता से निपटना संभवतः मेरे जीवन का सबसे मुश्किल समय था।' इस 38 साल के निशानेबाज ने कहा, 'बीजिंग में जहां मैंने अपनी सबसे बड़ी जीत दर्ज की, इससे पहले मैंने जीवन में एक ही लक्ष्य और जुनून के साथ 16 साल तक ट्रेनिंग की कि मैं ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतना चाहता हूं।' उन्होंने कहा, 'एक शानदार दिन, यह सपना, यह लक्ष्य साकार हो गया लेकिन मेरे जीवन में काफी बड़ा खालीपन आ गया। मुझे लगता है कि यह काफी चुनौतीपूर्ण था। मैं अवसाद में था। मुझे नहीं पता था कि अपने जीवन के साथ क्या करना है और आगे क्या करना है। यह संभवतः मेरे जीवन का सबसे मुश्किल लम्हा था।'

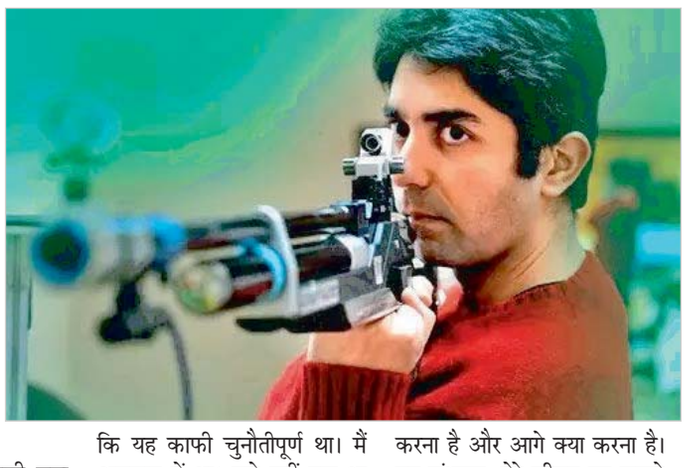

ब्रॉड ने टेस्ट चैंपियनशिप पर उठाए सवाल, कहा- भारत और बांग्लादेश की सीरीज एशेज के बराबर कैसे

स्पोर्ट्स डेस्क । इंग्लैंड के तेज गेंदबाज स्टुअर्ट ब्रॉड ने आईसीसी टेस्ट चैंपियनशिप को लेकर अपनी नाराजगी जाहिर की है। ब्रॉड ने आईसीसी द्वारा कराए जा रहे वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप पर सवाल उठाते हुए कहा कि इस वह इससे खुश नहीं है। आईसीसी ने जिस तरह से मैच को रखा है मैं उससे सहमत नहीं हूं। ब्रॉड से पहले कई क्रिकेटर आईसीसी के इस टेस्ट चैंपियनशिप पर सवाल खड़े कर चुके हैं। स्टुअर्ट ब्रॉड ने कहा कि वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप एक अच्छा फॉर्मेट है। इसका पहली बार आयोजन हो रहा है लेकिन इसके अंक तालिका से मैं खुश नही हूं। मैं ये नहीं समझ पा रहा हूं कि पांच मैचों की ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड की सीरीज भारत और बांग्लादेश की दो मैचों की टेस्ट सीरीज के बराबर कैसे हो गई। यह बात मेरी समझ से परे हैं क्योंकि दोनों टीमों को अंक सीरीज जीतने पर एक समान नहीं मिलेंगे। ब्रॉड ने आगे कहा कि टेस्ट चैंपियनशिप का आईडिया अच्छा है लेकिन अभी इस पर बहुत काम करने की जरूरत है। क्योंकि इसमें अभी भी कई सुधार किए जा सकते हैं। ब्रॉड ने यह भी माना कि एक साल में इंग्लैंड की टीम जितने मैच खेलती है उस हिसाब से वह टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में जगह बना बहुत मुश्किल होगा। गौर हो कि इंग्लैंड की टीम अन्य टीमों के मुकाबले अधिक टेस्ट मैच खेलती है। जबकि आईसीसी टेस्ट चैंपियनशिप के मुताबिक हर सीरीज में सिर्फ 120 अंक ही मिलेंगे। जितने अधिक मैच होंगे उतने अधिक मैचों में यह अंक विभाजित होंगे और जितने ही कम मैच होंगे उतने ही कम अंक कटेंगे। 2 से कम मैचों की सीरीज कोई देश नहीं खेल सकता।

अर्जुन कपूर को इंडस्ट्री में नौ साल पूरे, मां को याद करते हुए लिखा भावुक पोस्ट

अर्जुन कपूर अपनी मां मोना शौरी कपूर के बेहद करीब थे। अपने इंस्टाग्राम पर अर्जुन असर मां से जुड़ी यादें साझा करते रहते हैं। मदर्स डे के एक दिन बाद अभिनेता ने एक भावुक पोस्ट शेयर किया है। उनके बॉलीवुड में डेब्यू से पहले ही मोना कपूर का निधन हो गया था। अर्जुन कपूर ने अपनी एक थ्रोबैक तस्वीर पोस्ट की है। जिसमें वो अपनी मां के साथ हैं। तस्वीर में अर्जुन का वजन काफी बढ़ा हुआ नजर आ रहा है। उन्होंने कैप्शन में लिखा- 'कल मदर्स डे था। मैं इससे हर तरह से नफरत करता हूं। मुझे अभिनेता के रूप में नौ साल हो चुके हैं लेकिन मैं अभी भी मां आपके बिना खोया हुआ सा हूं। बस इस तस्वीर के साथ मैं उम्मीद करता हूं आप मुझे देखने के साथ मुस्कुरा रही हैं और मेरी पीठ सहला रही हैं।'

नौ साल पहले किया था डेब्यू

बता दें कि अर्जुन कपूर ने फिल्म 'इशकजादे' से डेब्यू किया था। फिल्म 11 मई 2012 को रिलीज हुई थी और बॉस ऑफिस पर सुपरहिट रही थी। इसमें उनके साथ परिणीति चोपड़ा की मुख्य भूमिका थी। वहीं मोना कपूर का निधन मार्च 2012 में हुआ था।

मां की याद में कही थी ये बात

टीवी शो 'स्टार वर्सेस फूड' के एक एपिसोड के दौरान अर्जुन कपूर ने कहा- 'जब मेरे माता-पिता अलग हुए थे, मैं खाने में सुकून ढूंढने लगा था। मैं इससे एक तरीके से भावुक रूप से जुड़ गया था, इसलिए मैंने खाना शुरू कर दिया था, और तब मैं खाने को खूब एंजॉय करने लगा'। उन्होंने बताया कि 'एक प्वॉइंट के बाद जब आपको कोई रोकने वाला नहीं हो तो इसे छोड़ना मुश्किल हो जाता है। आपकी मां आपसे प्यार करती हैं लेकिन उन्हें लगता है कि बच्चा है और यही खाने की उम्र है'।

जिंदगियों को बचाने के लिए हम भारतीयों ने जिस तरह हाथ मिलाया है, उस पर मुझे गर्व

बॉलीवुड एक्ट्रेस भूमि पेडनेकर देश भर के कोविड-19 से संक्रमित मरीजों की मदद के लिए जी-जान से जुटी हैं। उन्होंने कोविड वॉरियर नाम से एक सोशल मीडिया पहल की शुरुआत की है, जो लोगों की जिंदगियां बचाने के लिए सोशल मीडिया की ताकत का इस्तेमाल कर रहा है। जिस तरह से साथी नागरिकों को बचाने के लिए भारतीय एकजुट हुए हैं उसको लेकर भूमि गर्व महसूस करती हैं। भूमि कहती हैं, महामारी ने हमें उन तरीकों और रूपों में एकजुट किया है जैसे हम पहले कभी नहीं थे। संकट और दुःख की घड़ी में हम एकजुट हो गए हैं, हम उनके लिए प्रार्थना करने के लिए एकजुट हुए हैं जिन्हें हम जानते भी नहीं, हम जिंदगियां बचाने के लिए एकजुट हुए हैं, हम मानवता की खातिर एकजुट हुए हैं। उन्होंने कहा, मैं हर उस भारतीय को धन्यवाद देना चाहती हूं जो साथी नागरिकों को बचाने और जरूरतमंदों तक पहुंचने के लिए आगे आए हैं। जिंदगियों को बचाने के लिए जिस तरह हम भारतीयों ने हाथ मिलाया है, एक नागरिक के तौर पर मुझे उस पर गर्व है। भूमि लोगों को बचाने के लिए अथक रूप से कोशिश कर रही हैं और जरूरतमंद लोगों तक पहुंचने के लिए सोशल मीडिया का सहारा ले रही हैं। उनकी इस पहल से कई लोगों की जान बचाने में सफलता मिली है। वे कहती हैं, कोविड वॉरियर ने अच्छाई के लिए सोशल मीडिया की ताकत का इस्तेमाल किया है। इसने साझा दुश्मन से लड़ रहे लोगों को एकजुट करने के लिए डिजिटल की ताकत का उपयोग किया है। संकट की घड़ी में लोगों ने जिस तरह से एक-दूसरे के प्रति प्यार और अपनापन दिखाया है, उससे मैं हैरत में हूँ। मुझे पता है कि इस वायरस पर काबू पाने तक हमें लंबा रास्ता तय करना है, लेकिन मैं अपने हर पल का इस्तेमाल इससे लड़ने और किसी को बचाने के लिए कर रही हूं। भूमि कहती हैं, मैं जानती हूं कि इस डिजिटल फंटियर पर हर भारतीय मेरे साथ खड़ा है और जरूरतमंद लोगों की मदद पहुंचाने के लिए अपना हर पल व्यतीत कर रहा है। हम इस संकट के दौर से निकलेंगे। हम इस वायरस पर जीत हासिल करेंगे, फिलहाल हम ज्यादा से ज्यादा लोगों की जिंदगी बचाना चाहते हैं।

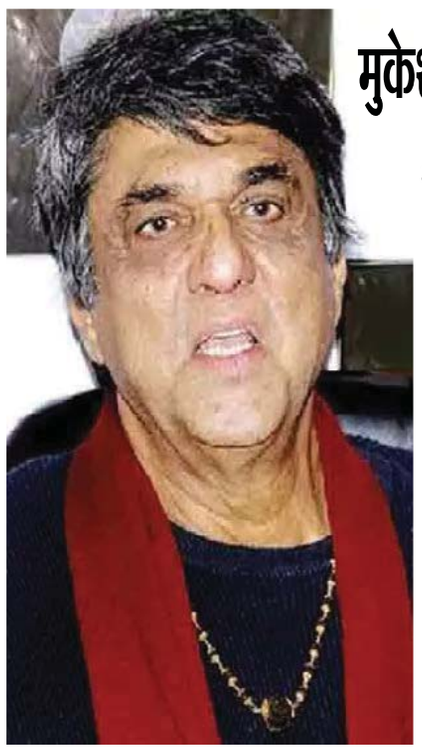

मुकेश खन्ना ने मौत की अफवाहों का खंडन करते हुए कहा- मैं बिल्कुल ठीक हूं

अनुभवी अभिनेता मुकेश खन्ना ने अपनी मौत संबंधी अफवाहों का खंडन करते हुए कहा कि वह सुरक्षित और स्वस्थ हैं। दरअसल, ऐसी अफवाह फैल गई थी कि खन्ना का निधन हो गया है। इसके बाद अभिनेता (62) ने मंगलवार को सोशल मीडिया पर इन अफवाहों का खंडन किया। खन्ना ने फेसबुक पर छोटी-सी वीडियो पोस्ट करके कहा कि वह कोरोना वायरस से संक्रमित नहीं हैं। अभिनेता ने कहा, ''मैं आपको बताना चाहता हूं कि मैं बिल्कुल ठीक हूं। मैं स्वस्थ हूं। मैं अफवाहों का खंडन करता हूं, मुझे इनका खंडन करने के लिए कहा गया था और मैं भी यह करना चाहता हूं।'' 'शक्तिमान' में सुपरहीरो और टेलीविजन धारावाहिक ''महाभारत'' में भीष्म पितामह की भूमिका निभाने के लिए पहचाने जाने वाले खन्ना ने झूठी खबरों को लेकर गुस्सा जताया। उन्होंने कहा, ''मैं उन लोगों की निंदा करता हूं जो ऐसी अफवाहें फैलाते हैं। सोशल मीडिया की यही दिक्कत है। मानसिक रूप से अस्थिर ऐसे लोगों का क्या इलाज होना चाहिए? उनके कुकृत्यों की सजा कौन देगा? बस बहुत हुआ। अब यह बहुत ज्यादा है। ऐसी फर्जी खबरों पर रोक लगनी चाहिए।'' वीडियो के शीर्षक में खन्ना ने कहा कि वह कोविड-19 से संक्रमित नहीं हैं। उन्होंने लिखा, ''आपकी दुआओं के कारण मैं पूरी तरह स्वस्थ और सुरक्षित हूं। मुझे कोविड-19 नहीं है और मुझे किसी भी अस्पताल में भर्ती नहीं कराया गया।'' खन्ना ने कहा, ''मुझे नहीं पता किसने यह अफवाह फैलायी और मैं नहीं जानता कि ऐसी अफवाहें फैलाने वाले की मंशा क्या है। वे ऐसी झूठी खबरें फैलाकर लोगों की भावनाओं से खिलवाड़ करते हैं।

फिल्म सालार में डबल रोल निभा सकते हैं प्रभास

साउथ सुपरस्टार प्रभास जल्द ही कई फिल्मों में नजर आने वाले हैं। इनमें से एक फिल्म 'सालार' भी है। यह फिल्म अगले साल 14 अप्रैल 2022 को रिलीज होगी। अब खबर आ रही है कि इस फिल्म में प्रभास डबल रोल में नजर आने वाले हैं। खबर है कि 'सालार' में प्रभास डबल रोल करते दिखेंगे। इससे पहले उन्हें 'बाहुबली' में दोहरी भूमिका में देखा गया था और अब 'सालार' से दर्शकों को दोबारा मनोरंजन का डबल डोज मिलने वाला है। प्रभास ने पिछले साल इस फिल्म की घोषणा करते हुए कहा था, मैं हमेशा से प्रशांत नील के निर्देशन में एक अभिनेता बनकर काम करना चाहता था। मुझे नहीं लगता कि एक अभिनेता के रूप में मुझे उनके साथ काम करने का इससे बढ़िया मौका मिलेगा। उन्होंने कहा, यह एक बहुत शानदार फिल्म है और इसमें मेरा किरदार बेहद हिंसक है। यह कुछ ऐसा है, जो मैंने इससे पहले कभी नहीं किया। मेरा खूंखार रूप देख दर्शक हैरान रह जाएंगे। कन्नड़ फिल्म 'सालार' का निर्देशन प्रशांत नील कर रहे हैं, जिन्होंने इससे पहले सुपरहिट फिल्म 'केजीएफ चैप्टर 2' का निर्देशन किया था। इस बिग बजट की फिल्म के निर्माता विजय किरागंदुर हैं। इस फिल्म में अभिनेत्री श्रुति हासन लीड एक्ट्रेस की भूमिका में हैं। फिल्म में अभिनेत्री राम्या कृष्णन 'सालार' में प्रभास की बड़ी बहन की भूमिका निभा सकती हैं। इस फिल्म को हिन्दी, तमिल और मलयालम भाषाओं में भी डब किया जाएगा। प्रभास जल्द ही फिल्म 'राधे श्याम' में नजर आएंगे। इस फिल्म में उनके साथ पूजा हेगड़े नजर आएंगी। इस फिल्म में प्रभास लंबे समय बाद किसी रोमांटिक रोल में नजर आएंगे। इसके अलावा प्रभास फिल्म 'आदिपुरुष' को लेकर भी सुर्खियों में हैं। इस फिल्म में वह भगवान राम का किरदार निभाने वाले हैं। प्रभास निर्देशक नाग अश्विन की साइंस फिक्शन फिल्म और 'रैम्बो' के हिन्दी रीमेक में नजर आएंगे। वह सिद्धार्थ आनंद की फिल्म में भी कैटरीना कैफ के साथ नजर आ सकते हैं।

सलमान खान की 'राधे' का बनेगा सीक्वल, लेकिन यह है शर्त

बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान अपनी फिल्म 'राधे : योर मोस्ट वांटेड भाई' को लेकर सुर्खियों में बने हुए हैं। यह फिल्मी ईद के साथ मौके पर यानी 13 मई को रिलीज होने जा रही है। सलमान इन दिनों फिल्म के प्रमोशन में व्यस्त है। मीडिया इंटरेक्शन के दौरान सलमान खान के 'राधे' को लेकर कई सवाल पूछे गए। ऐसे में अभिनेता से फिल्म के सीक्वल और 'राधे' की 'वांटेड' से तुलना को लेकर भी सवाल किए गए।

सलमान का कहना है कि उनकी इस फिल्म का सीक्वल भी आ सकता है। अफवाहें थीं कि 'राधे' फिल्म 'वॉन्टेड' का सीक्वल है। इसका एक बड़ा कारण यह भी था कि दोनों फिल्मों के निर्देशक प्रभुदेवा हैं। दोनों ही फिल्मों में सलमान पुलिसवाले बने हैं और दोनों ही फिल्मों में 'कमिटमेंट' वाला डायलॉग है।

इस पर सलमान ने कहा, दोनों फिल्मों में कोई समानता नहीं है। सिर्फ कमिटमेंट वाला डायलॉग वही है। वॉन्टेड का सीक्वल कभी नहीं आएगा, लेकिन 'राधे' को यदि दर्शकों से अच्छा रिस्पॉस मिला तो इसका सीक्वल जरूर बनाएंगे।

सलमान ने कहा, 'हमारी फिल्म 'राधे' मल्टीप्लेक्स या सिंगल थियेटर में रिलीज होने जैसी फिल्म है। हमने फिल्म बनाई ही ऐसी है। सबकी तरह हमें भी यही लग रहा था कि सबकुछ सामान्य हो जाएगा।

उन्होंने कहा, जैसे ही हमने फिल्म की रिलीज डेट का ऐलान किया, वैसे ही फिर से ये कोरोना बाबा शुरू हो गए। खैर, हमें कितना ही नुकसान क्यों ना हो। इस मुश्किल घड़ी में हम अपने प्रशंसकों का दिल जरूर बहलाएंगे। राधे ऐसे समय में रिलीज हो रही है, जब अधिकतर लोग घरों में ही रहना चाहते हैं और यही उनके लिए सही भी है। समय बेहतर हुआ तो ये फिल्म सिनेमाघरों में नए सिरे से भी रिलीज हो सकती है।

उन्होंने कहा, मैं नहीं चाहता कि लोग अभी सिनेमाघरों में फिल्म देखने जाएं। फिर कोरोना होने पर मेरी फिल्म को दोष दें और कहें सलमान की पिक्चर देखने गए और कोरोना फैल गया।

प्रभु देवा के निर्देशन में बनी 'राधे' में सलमान के साथ दिशा पटानी, रणदीप हुड्डा और जैकी श्रॉफ भी प्रमुख भूमिका में हैं। दिशा इसमें जैकी की बहन का किरदार निभा रही हैं। इस फिल्म में अभिनेत्री जैकलीन फर्नांडिज एक आइटम नंबर पर थिरकती नजर आएंगी।

इस फिल्म को सोहेल खान, सलमान खान और अतुल अग्निहोत्री ने मिलकर बनाया है। यह सलमान के करियर की सबसे छोटी फिल्मों में से एक है, जो दो घंटे से कम अवधि की है। सलमान फिल्म 'कभी ईद कभी दिवाली' को लेकर भी सुर्खियों में हैं। इसमें वह अभिनेत्री पूजा हेगड़े के साथ रोमांस करते दिखेंगे।

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

दवाएं भी दे सकती हैं दगा

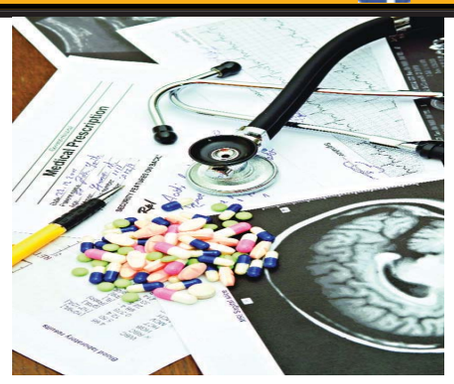

दवाएं उतनी ही मात्रा में लेना चाहिए जितनी चिकित्सक ने लिखी हों। इससे कम या अधिक नुकसानदायक हो सकती हैं। अब तक ऐसी कोई औषधि नहीं है, जिसके कोई साइड इफेक्ट्स न हों। अतः अपने मन से खाई गई कोई दवा, जहर भी हो सकती है।

जीवन की रक्षा करने वाली दवाइयां हमेशा सुरक्षित नहीं होती हैं। यदि आप चिकित्सक की सलाह के बिना इन्हें मनमाने तरीके से ले रहे हो तो ये खतरनाक भी हो सकती हैं।

कोर्स और डोज पर दें ध्यान

लगभग सभी बीमारियों में दवाइयों की निश्चित मात्रा निर्धारित समय तक ही दी जाती है। खुराक एवं मात्रा में से किसी भी एक का ध्यान न रखा जाए तो ये दवाइयां खतरनाक हो सकती हैं। दमा के तेज अटैक से तुरंत राहत के लिए चिकित्सक ओरल स्टीरायड्स मरीज को देते हैं, लेकिन देखा गया कि करीब 5 से 10 प्रतिशत मरीज उन पर्चों को संभालकर रख लेते हैं ताकि जब दोबारा अटैक आए तो वही दवा फिर से खा लें। कई मरीज तो चिकित्सक को बिना बताए हफ्तों और यहां तक कि महीनों भी अपने मन से स्टेरायड्स खाते रहते हैं। इसके गंभीर परिणाम होते हैं। इसी तरह ब्लड प्रेशर की दवाइयों की खुराक बिना रक्तचाप नापे ज्यादा या कम नहीं करना चाहिए।

कहीं ऐसा तो नहीं करते

कई मरीजों के परिजन अस्पताल के आईसीयू में यह कहते हुए सुनाई पड़ते हैं कि हमारे मरीज को रक्तचाप की शिकायत अर्से से है और वे नियमित दवा खाते हैं। अब सिरदर्द की शिकायत होने पर भी उन्हें लगा कि रक्तचाप बढ़ गया है इसलिए एक गोली और खा ली।

इससे रक्तचाप तेजी से गिर गया तो आईसीयू में भर्ती करवाना पड़ा। कई लोग सिरदर्द, बदन दर्द के लिए एस्प्रीन, ब्रूफेन व अन्य दर्द निवारक दवाएं बिना निदान के अपने आप कई वर्षों तक लगातार लेते रहते हैं। ये दवाइयां कुछ समय के लिए सिर्फ दर्द को दबाती हैं। कारण को ठीक नहीं करती। इन दवाइयों से पेट में अल्सर, एनिमिया, गुर्दे खराब होना इत्यादि परेशानियां आ सकती हैं। कई लोग कमजोरी के लिए विभिन्न प्रकार के टॉनिक व विटामिन्स खाते रहते हैं। बी-कॉम्प्लेक्स व विटामिन-सी यदि ज्यादा ले भी लिए तो मूत्र के साथ निकल जाते हैं। लेकिन कुछ घुलनशील विटामिन्स जैसे विटामिन ए व विटामिन डी ज्यादा खुराक के कारण शरीर की प्राकृतिक प्रक्रिया में व्यवधान भी उत्पन्न कर सकते हैं।

एंटीबायटिक्स से बचें

एंटीबायटिक्स अपने मन से न लें। कई बार उनकी जरूरत नहीं होती। कई मरीज इस हिस्ट्री के साथ आते हैं कि पिछली बार जैसे लक्षण थे, इसलिए हमने आपका पिछला पर्चे दिखाकर दवा ले ली, लेकिन इस बार फायदा नहीं हुआ। एक ही एंटीबायटिक को बार-बार लेने से उससे शरीर में रोग-प्रतिरोधक शक्ति कम हो जाती है। ऐसी स्थिति में हल्की एंटीबायटिक असर नहीं करती। अब केवल ताकतवर एंटीबायटिक देने पर भी फायदा होता है। अधिक समय तक एंटीबायटिक खाने से बीमारी बढ़ती रहती है और कई बार उसके साइड इफेक्ट्स जैसे- दस्त होना, पेट खराब हो जाना, मुंह में छाले इत्यादि हो सकते हैं। इसलिए कोई सी भी एलोपैथिक दवाई चिकित्सक के परामर्श के बगैर न लें। खासकर वे लोग जो पहले ही से दवाइयां लेते रहते हैं, उन्हें विशेष ख्याल रखना चाहिए, क्योंकि उनकी पहले की दवाइयां इन नई दवाइयों से मिल कर उनके लिए नई परेशानियां खड़ी कर सकती हैं।

दर्द को न करें नजरअंदाज

अपने शरीर में होने वाले दर्द को हम अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं, लेकिन कई बार ये दर्द किसी बीमारी का संकेत भी हो सकते हैं। ऐसे में इन्हें अनदेखा करने की बजाय तुरंत इनका इलाज करवाकर बड़ी बीमारी को टाला जा सकता है...

पेट दर्द

पेट दर्द होना एक सामान्य सी बात है, लेकिन महानगरों में यह कुछ ज्यादा ही देखने में आता है। वजह यह कि महानगरों के लोगों का खाने-पीने का कोई वक्त नहीं होता। फिर बाहर के खाने से बचना भी यहां के लोगों के लिए मुश्किल होता है। जहां तक महिलाओं की बात है तो उनमें पेट का दर्द यूट्रस में होने वाली समस्याओं का संकेत हो सकता है। कई बार दर्द के साथ-साथ पेट में गड़बड़ भी हो सकती है जैसे- कब्ज या डायरिया। सही वजह पता लगाने का सबसे बेहतर तरीका है अल्ट्रासाउंड। इससे पेट की गांठ का आसानी से पता लगाया जा सकता है। अगर जल्दी पता लग जाए, तो सिर्फ दवा से ही इसका इलाज संभव है, लेकिन गांठ बढ़ जाने से की-होल सर्जरी करवानी पड़ती है।

कमर दर्द

कमर दर्द से भी तमाम लोग परेशान रहते हैं। दिनभर कंप्यूटर के सामने बैठे रहने से यह समस्या और भी बढ़ जाती है। कमर दर्द अगर नीचे की तरफ बढ़ने लगे और तेज हो जाए, तो जल्द से जल्द डॉक्टर को दिखाएं। कभी-कभी दर्द कुछ मिनट ही होता है और कभी-कभी यह घंटों तक रहता है। ऐसा दर्द पथरी की वजह से हो सकता है। इसकी जांच एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड और यूरीन टेस्ट के जरिए करवाई जा सकती है।

जबड़े का दर्द

जबड़े का दर्द अक्सर जबड़ों के जॉइंट्स के ज्यादा काम करने की वजह से होता है। यह समय के साथ सही भी हो जाता है, लेकि न मुंह खोलते और बंद करते वक्त जब आवाज के साथ ऐसा दर्द हो तो यह जॉइंट की चोट की वजह से भी हो सकता है। साधारण एक्स-रे से इसका पता लगाया जा सकता है। दवा से इसका इलाज करवाया जा सकता है।

जोड़ों का दर्द

यह दर्द ज्यादातर मामलों में पचास साल की उम्र के बाद शुरू होता है। इसकी शुरुआत घुटनों में हल्के दर्द के साथ होती है। धीरे-धीरे यह दर्द हाथों की अंगुलियों के जोड़ों में भी आ जाता है। यह दर्द हिलने-डुलने से बढ़ता जाता है। दर्द के बढ़ जाने पर तुरंत ऑर्थोपेडिक डॉक्टर से संपर्क करें। एक्स-रे या बोन डेंसिटी टेस्ट से ऑस्टियोआर्थराइटिस या रुमेटॉइडआर्थराइटिस का पता लगाया जा सकता है। यह समस्या पुरुषों से ज्यादा महिलाओं में पाई जाती है। इस बीमारी को जड़ से खत्म नहीं किया जा सकता, लेकिन फिजियोथेरेपी और स्टेरॉइड्स लेकर इसे बढ़ने से रोका जरूर जा सकता है। तकलीफ बढ़ने पर नी-रिप्लेसमेंट सर्जरी की जरूरत भी पड़ सकती है।

अंगूठों का दर्द

अगर अंगूठों में दर्द रहता है तो यह गठिया का लक्षण हो सकता है। जोड़ों में ज्यादा यूरिक एसिड क्रिस्टल जमा हो जाने से यह दर्द होता है। वक्त गुजरने के साथ ही यह दर्द इतना असहनीय हो सकता है कि इससे चलने-फिरने में भी दिक्कत हो सकती है। इसे एक्स-रे द्वारा पहचानकर दवा से ठीक किया जा सकता है।

माथे का दर्द

ज्यादातर दर्द पूरे सिर में होता है, लेकिन जब यह दर्द काफी तेज हो तो यह गंभीर स्थिति हो सकती है, इसलिए सिर दर्द को कभी नजरअंदाज न करें और तुरंत डॉक्टर से मिलें। यह 50 साल से ज्यादा उम्र वाले लोगों में देखा जाता है।

पसीने का जड़ी-बूटी द्वारा उपचार

गर्मियों के मौसम मे चिल-चिलाती धूप व बढ़ती गर्मी पसीने का कारण बनती है जो शरीर से पसीने की दुर्गन्ध का भी मुख्य कारण है। साथ ही यह घमौरियों व चर्मरोग को भी जन्म देते है।

इस बढ़ती गर्मियो मे पसीने से निजात पाने के लिए जड़ी-बूटी द्वारा इसका उपचार संभव है।

एक बार पहने हुए वस्त्रों को बिना धोए अलमारी में न रखें।
बिना धुले वस्त्रों को अलमारी में रखने पर दुर्गन्ध पैदा करने वाले बैक्टीरिया सक्रिय होकर वस्त्रों में दुर्गन्ध पैदा कर देते हैं।
शरीर की साफ-सफाई का विशेष ख्याल रखना चाहिए।
नीम युक्त साबुन का नहाते वक्त इस्तेमाल करें तो बेहतर रहेगा।
जहाँ तक हो सके कड़ी धूप से बचें।
वस्त्र ऐसे पहनें जो शरीर से चिपके हुए न हों क्योंकि तंग वस्त्रों में ज्यादा पसीना आता है और वाष्पीकरण सही ढंग से नहीं हो पाता है जिससे कपड़ों से दुर्गन्ध आने लगती है।
सिन्थेटिक वस्त्र न पहनकर सूती वस्त्र पहने तो ज्यादा ठीक रहेगा।
तली-भुनी व मसालायुक्त चीजें न खाएँ।
मौसमी फलों का सेवन करें।

जड़ी-बूटी द्वारा उपचार

बबूल के पत्ते और बाल हरड़ को बराबर-बराबर मिलाकर महीन पीस लें। इस चूर्ण की सारे शरीर पर मालिश करें और कुछ समय रूक-रूक कर स्नान कर लें। नियमित रूप से यह प्रयोग कुछ दिनों तक करते रहने से पसीना आना बंद हो जाएगा।

दुर्गन्ध करे दूर

पसीने की दुर्गन्ध दूर करने के लिए बेलपत्र के रस का लेप शरीर पर करना चाहिए। अडूसा के पत्रों के रस में थोड़ा शंख चूर्ण मिलाकर शरीर पर लगाने से शरीर से पसीने की दुर्गन्ध दूर हो जाती है।

विटामिन डी की कमी घातक

विटामिन डी की कमी आपकी धमनियों को कठोर बना सकती है। एक नए अध्ययन के मुताबिक लोगों के शरीर में विटामिन डी की कमी धमनियों को सख्त बना सकती है।

विटामिन डी की कमी से रक्त वाहिनियों के स्वास्थ्य पर असर पड़ सकता है, इससे रक्तचाप (बीपी) बढ़ सकता है और दिल की बीमारियां हो सकती हैं। अध्ययन में शामिल जिन प्रतिभागियों ने विटामिन डी की उच्च मात्रा ली, उनकी रक्तवाहिनियों के स्वास्थ्य में सुधार देखा गया और उनका रक्तचाप भी कम हो गया था। अध्ययन में संस्थान के करीब 550 कर्मचारी शामिल हुए थे।

चिकन पॉक्स घबराएं नहीं

डॉक्टरों का मानना है कि चिकन पॉक्स को समझने में मरीज देरी कर देते हैं, जिससे अक्सर इलाज मुश्किल हो जाता है। इसलिए सबसे पहले चिकन पॉक्स के लक्षण जानने जरूरी हैं। विशेषज्ञ बताते हैं कि सबसे खास लक्षण है शरीर में पानी युक्त लाल दानों का उभरना। इसके बाद मरीज को जुकाम व बुखार की शिकायत शुरू हो जाती है।

सावधानियां जरूर बरतें

एक बार आपको ये लक्षण दिख जाएं तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें। दूसरे लोगों को इससे सुरक्षित रखने का प्रयास भी करें। याद रखें कि हवा और खांसी के माध्यम से संक्रमण एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के शरीर तक पहुंच जाता है। बच्चों को विशेष रूप से चिकन पॉक्स के रोगी से दूर रखें। चिकन पॉक्स के रोगी घर से कम से कम निकलें। इससे एक परिवार का संक्रमण दूसरे परिवार तक पहुंचने से रुकेगा। रोगी के पास खूब सफाई रखें, जिससे संक्रमण बढ़ने न पाए।

साफ-सफाई का रखें ख्याल

कई लोगों को भ्रम है कि चिकन पॉक्स के रोगी को नहलाना नहीं चाहिए, जबकि सच यह है कि चिकन पॉक्स के मरीज को अतिरिक्त साफ-सफाई की जरूरत होती है। मरीज को रोज नीम के पानी से नहलाना चाहिए। साफ कपड़े पहनाने चाहिए। उसके बर्तन वगैरह भी अलग रखने चाहिए, ताकि उसका संक्रमण दूसरों तक न पहुंचे।

कब घातक होता है चिकन पॉक्स ? यों तो चिकन पॉक्स पूरी तरह से इलाज वाली बीमारी है और सही इलाज मिलने पर जल्दी ठीक भी हो जाती है। संक्रमण भी एक हफ्ते से दो हफ्ते के बीच में खत्म हो जाता है। लेकिन अगर सावधानियां न बरती जाएं तो दो से तीन हफ्ते तक संक्रमण शरीर में बढ़ता रहता है। अगर ये नियंत्रित न हो तो दिमाग और लीवर तक इसका असर पहुंच जाएगा। इसके बाद दूसरी बीमारियां आपको अपनी गिरफ्त में लेने लगती हैं। इनमें ज्वॉइंडिस यानी पीलिया जैसी बीमारी भी हो सकती है, जिसे आम लोग जानते-समझते हैं। हाइड्रोसेफेलिक्स जैसी गंभीर बीमारी भी हो सकती है, जिसका अक्सर लोगों ने नाम भी नहीं सुना होता। हाइड्रोसेफेलिक्स में दिमाग में पानी भर जाता है।

टीकाकरण ही एकमात्र बचाव

चिकनपॉक्स से बचाव के लिए सीएक्सवी वैक्सीनेशन एकमात्र विकल्प है। गर्भवती महिला को डोज दी जाती है, जिससे बच्चा सुरक्षित रहे। अगर गर्भवती महिला को दवा नहीं दी गई है तो जन्म के 14 हफ्ते के भीतर बच्चों को चिकन पॉक्स की तीन डोज दी जाना चाहिए। निजी नर्सिंग होम में टीका 1350 रुपए में उपलब्ध है।

इन्हें जल्दी हो सकता है संक्रमण

गर्भावस्था के समय महिला को चिकन पॉक्स होने पर नवजात शिशु में संक्रमण का खतरा 70 प्रतिशत बढ़ जाता है। कमजोर रोग-प्रतिरोधक क्षमता वाले लोगों को भी यह वायरस आसानी से शिकार बना लेता है, इसलिए गर्भ ठहरने के 14 हफ्ते के बाद दी गई पावर बूस्टर डोज को वैरिसैला वायरस के बचाव के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

दोबारा चिकन पॉक्स, दोगुनी सावधानी

जिन लोगों को दोबारा चिकन पॉक्स हो रहा है, उन्हें सचेत रहने की ज्यादा जरूरत होती है। चिकनपॉक्स एक बार हो तो अधिक गंभीर नहीं है, जबकि यदि दस साल की उम्र के बीच बच्चों को दो बार से अधिक बार हो तो ल्यूकीमिया बीमारी हो सकती है। ये खून से संबंधित बीमारी है, जिससे रक्त में पाई जाने वाली लाल रक्त कणिकाएं तेजी से क्षतिग्रस्त होती हैं।

मिथ और हकीकत

मिथ- गहरे रंग की चीजें खाने से गहरे दाग पड़ते हैं!
सच- गहरे दाग से बचना चाहते हैं तो केवल एक सूत्र याद रखें कि दागों पर बार-बार नाखून न लगें।
मिथ- चिकन पॉक्स ठीक होने के चार या पांच महीने तक नॉनवेज नहीं खाना चाहिए, वरना शरीर में खुजली हो जाती है।
सच- मेडिकल साइंस नॉनवेज खाने से कतई नहीं रोकती। यहां तक कि अगर आप सी फूड खाएं तो भी कोई नुकसान नहीं होता।
मिथ- चिकन पॉक्स के दौरान बाल नहीं धुलने चाहिए और नहाना भी नहीं चाहिए वरना शरीर में हवा घुल जाती है और बुढ़ापे में कई समस्याओं का सामना पड़ता है।
सच- आप रोज नहा सकते हैं। बाल भी धुल सकते हैं। केवल इतना ध्यान रखिए कि दाग वाले स्थान पर गीले तौलिए से न पोछें, वरना संक्रमण हो सकता है।
मिथ- अगर एक बार चिकन पॉक्स हो गया तो दोबारा नहीं हो सकता।
सच- ऐसा नहीं है। कई लोगों को ये दोबारा होता है। इसलिए किसी गलतफहमी में न रहें। सावधानी बरतें।
मिथ- खुजली वाले स्थान पर कुछ लगाना नहीं चाहिए।
सच- डॉक्टर ऐसा कोई परहेज नहीं बताते।

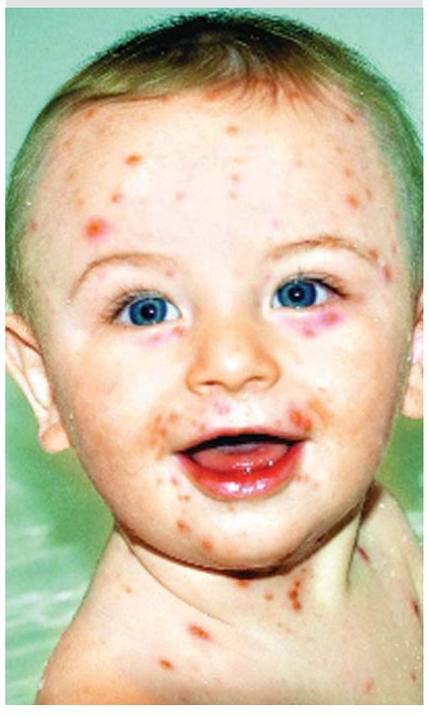

तुरंत एनर्जी दे सुबह का नाश्ता

सुबह का नाश्ता शरीर के लिए फायदेमंद होता है। जो शरीर को तुरंत एनर्जी प्रदान करता है। साथ ही नाश्ते मे अंकुरित अनाज तथा फलों में केला, पपीता, सेब, आम, अंगूर व शहद, दही ले तो यह और अधिक फायदेमंद होगा।

अंकुरित फलों व अनाज में एनर्जी

पसंदीदा फलों को जैसे केला, पपीता, सेब, आम, अंगूर, सबको छोटे-छोटे टुकड़े करके कांच के कटोरे में रखें। सबसे पहले तीन बड़े चम्मच, शहद डालें और फल डालें। उसके ऊपर योगार्ड (गाढ़ा दही) अगर आप इसे ठंडा खाना चाहते हैं तो इसे फ्रिज में रख दें, अब बाहर निकालकर नाश्ता करें। यह आपके लिए सुपाच्य तथा तुरंत स्फूर्ति देने वाला होगा। खासतौर पर महिलाओं के लिए पौष्टिकता, रक्तवृद्धि तथा त्वचा की नमी बनाए रखने वाला नाश्ता है। सभी विटामिन सी वाले फल यानी अंगूर, अनार, अनानस, संतरा, पपीता, मौसमी सभी फलों को काट लें। अब उस पर काला नमक, सफेद नमक, भुनाजीरा, नीबू डालकर मिक्स करें। इस तरह से अपनी दिनचर्या में पौष्टिक नाश्ता का समावेश करें। सुबह सही समय अवश्य नाश्ता करें। वक्त की कमी की वजह से कुछ भी खाकर पेट न भरें। अगर समय की कमी हो, तो रात में ही अंकुरित अनाज की तैयारी कर लें, रात में ही भिगा दें, जो अंकुरित अनाज आपको पसंद हो जैसे- काला चना, साबुत मूंग, लोभिया, मूंगफली दाना। सुबह उसमें प्याज, टमाटर, खीरा, ककड़ी, हरी धनिया, मिर्च महीन काट कर ऊपर से नींबू निचोड़ दें।

नमकीन दलिया फायदेमंद

काला नमक काली मिर्च, भुना जीरा डाल कर खाएं, अगर आप को कच्चा अंकुरित अनाज पसंद नहीं है, तो कुकर में एक सीटी लगा बनाया जा सकता है। बस हो गया आपका सेहतमंद नाश्ता तैयार। फिर कभी-कभी नमकीन दलिया भी तैयार करके खाया जा सकता है। चाहे तो आप इस नमकीन दलिया में स्वाद के लिए कोई पसंदीदा सब्जी भी डाली जा सकती है। इस तरह कम समय में पौष्टिक नाश्ता तैयार हो सकता है। सुबह के नाश्ते में हो सके तो दूध अवश्य लें। सुबह के समय पाचन क्रिया तेज होती है।

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

चीन की 2020 की जनगणना से हम क्या सीख सकते हैं?

बीजिंग।

चीन के राष्ट्रीय सांख्यिकी ब्यूरो द्वारा 11 मई को जारी सातवीं राष्ट्रीय जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, चीनी मुख्यभूमि की कुल जनसंख्या वर्ष 2020 में 1.4118 अरब हो गई है। इन नतीजों में यह बात सामने आई कि चीन की आबादी कम प्रजनन और उम्र बढ़ने के दौर में है, और जनसंख्या वृद्धि लगभग थम सी गई है। देखा जाए तो पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की स्थापना के बाद से, पिछले सात दशकों में जनसंख्या की संख्या और संरचना, साथ ही प्रजनन, मृत्युदर और प्रवासन में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। चीन ने आधी शताब्दी में उच्च प्रजनन क्षमता और उच्च मृत्युदर से कम प्रजनन क्षमता और कम मृत्युदर तक पूर्ण जनसांख्यिकीय परिवर्तनकाल का अनुभव किया है और 1960 और 1970 के दशक में उच्च विकास दर दर्ज की थी, लेकिन अब निकट भविष्य में चीन में नकारात्मक जनसंख्या वृद्धि की उम्मीद है। फिलहाल, चीन में जनसंख्या संक्रमण की प्रक्रिया बहुत संकुचित हो गई है, जो सामाजिक-आर्थिक विकास और प्रासंगिक नीतियों सहित संस्थागत परिवर्तनों द्वारा हुई है। सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार, संक्रामक रोगों पर नियंत्रण, और शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में मातृ और बाल स्वास्थ्य देखभाल के विकास से बेहद लाभ हुआ। इतना ही नहीं, शिशु मृत्युदर वर्ष 1949 में लगभग 200 प्रति हजार से घटकर 107 प्रति हजार हो गई और आगे 1975 में 48 प्रति हजार हो गई। साथ ही, अंडर-5 मृत्युदर भी 20 वर्षों के दौरान काफी कम हो गई। अधिकांश अन्य एशियाई देशों की तरह चीन में प्रजनन संक्रमण के कई चालक थे। वर्ष 1964 में शहरी प्रजनन क्षमता में गिरावट के कारण, प्रजनन संक्रमण तीन दशकों के भीतर हुआ। जन्म नीति के समायोजन के कारण वर्ष 2016 और वर्ष 2017 में मामूली वृद्धि के अपवाद के साथ, 21वीं सदी में कुल प्रजनन दर 1.6 या उससे कम रह गई है, जिसने दूसरे बच्चे के जन्म की संभावित संभावना को जारी किया है। यहां गौर करने वाली बात है कि प्रसव उम्र में महिलाओं की संख्या में गिरावट और इस समूह की उम्र बढ़ने के साथ-साथ लगातार कम प्रजनन दर के कारण 2019 में पैदा हुए बच्चों की संख्या 1.46 करोड़ रही, जो कि लगभग 50 वर्षों में सबसे कम है, और 2020 में गिरावट जारी रही। बेशक, गिरती प्रजनन दर ने जनसंख्या की आयु संरचना परिवर्तन को गति दी है। जन्मों की संख्या में गिरावट के कारण, 1998 से चीन में 0-14 जनसंख्या का आकार घटता रहा है, और कुल जनसंख्या में इसकी हिस्सेदारी धीरे-धीरे कम हुई है। सन् 1960 के दशक के उत्तरार्ध में चीन की जनसंख्या में प्राकृतिक वृद्धि की दर लगभग 2.7 प्रतिशत थी, और यह 1998 में एक प्रतिशत से नीचे चली गई। साल 2000 से 2010 तक प्राकृतिक वृद्धि की औसत वार्षिक दर 0.57 प्रतिशत थी, और यह घटकर 0.53 प्रतिशत रह गई। चीन की जनसंख्या शून्य वृद्धि के करीब है और पिछले कुछ अनुमानों की तुलना में कुछ समय पहले ही घट जाने की उम्मीद है।

चीन के कुछ प्रांतों ने 21वीं सदी के पहले दशक में युवा लोगों के बाहर प्रवास के कारण पहले से ही नकारात्मक जनसंख्या वृद्धि का अनुभव किया है, जबकि उत्तरी चीन के तीन प्रांतों (ल्याओनिंग, हेइलोंगच्यांग, और चिलिन) में 2011 के बाद से कम प्रजनन क्षमता और उम्र बढ़ने के कारण प्राकृतिक वृद्धि की नकारात्मक दर रही।

हालांकि, चीन ने 14वीं पंचवर्षीय योजना (2021-25) तैयार की है, जो बच्चों की देखभाल, बच्चे पैदा करने और बच्चों की शिक्षा के बोझ को कम करने, बच्चे की देखभाल के लिए नीति प्रणाली में सुधार करने सहित जनसंख्या की बढ़ती उम्र के लिए सक्रिय प्रतिक्रिया की एक राष्ट्रीय रणनीति को लागू करने का प्रस्ताव करती है।

14वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान चीनी आबादी की वृद्धि दर शायद शून्य होगी

बीजिंग।

चीनी राजकीय सांख्यिकी ब्यूरो द्वारा 11 मई को जारी सातवीं राष्ट्रीय जनगणना के परिणामों से पता चला कि पिछले दस साल में चीन की जनसंख्या निरंतर बढ़ती रही, लेकिन प्रजनन दर नीचे रही। चीनी जनसंख्या संघ के अध्यक्ष चाइ चनवु ने सीएमजी संवाददाता के साथ हुई एक खास बातचीत में बताया कि 14वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान चीन की आबादी की वृद्धि दर शायद शून्य होगी। उन्होंने कहा, हमें प्रजनन गारंटी व्यवस्था में सुधार कर लोगों में बच्चे पैदा करने की इच्छा में बढ़ोतरी करने की जरूरत है। सातवीं राष्ट्रीय जनगणना के अनुसार, चीन की आबादी 1 अरब 41 करोड़ 1 लाख 78 हजार है, जो वर्ष 2010 में हुई जनगणना की तुलना में 7 करोड़ 20 लाख 60 हजार से अधिक रही और 5.38 प्रतिशत बढ़ी। दस साल में सालाना वृद्धि दर 0.53 प्रतिशत रही है। वर्ष 2020 में चीन में प्रजनन आयु के वर्ग की महिलाओं में जन्म देने की दर 1.3 थी ,जो निचले स्तर पर रही। चीनी जनसंख्या संघ के अध्यक्ष चाई चेनवु के विचार में प्रजनन स्तर का नीचे स्तर पर रहना अनुमान के अनुकूल है। भविष्य में चीन शायद आबादी की शून्य वृद्धि के दौर में प्रवेश करेगा। उन्होंने बताया, चीन की आबादी बहुत विशाल है। चीन संसाधन और पर्यावरण के बड़े दबाव का सामना कर रहा है। चोटी पर पहुंचने के बाद चीन की आबादी का धीरे-धीरे घटने की हम प्रतीक्षा में हैं, लेकिन वर्तमान में जन्मदर नीची है, जिस पर ध्यान देने की भी आवश्यकता है। चाई चेनवु ने बताया कि प्रजनन दर की गिरावट चीन के आधुनिक विकास का अनिवार्य परिणाम है।

पूरे विश्व में औद्योगिक और आधुनिक देश प्रजनन दर की गिरावट के खतरे का सामना कर रहे हैं। कुछ लोगों का विचार है कि हमें परिवार नियोजन की नीति बदलकर ऐसी स्थिति का सामना करना चाहिए।

ईद पर भारत और पाकिस्तान की सेनाओं के बीच मिठाई का आदान-प्रदान

श्रीनगर।

ईद-उल-फितर के मौके पर गुरुवार को कश्मीर में नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर भारतीय सेना और पाकिस्तानी सेना ने मिठाइयों का आदान-प्रदान किया। ईद-उल-फितर ने एलओसी पर नए सिरे से गर्मजोशी और सौहार्द की शुरूआत की है क्योंकि पुरानी परंपराओं को पुनर्जीवित किया गया है। तंगधार, कुपवाड़ा और किशनगंगा नदी पर तिथवाल क्रॉसिंग पर बैठकें आयोजित की गईं। दोनों पक्षों द्वारा सभी कोविड प्रोटोकॉल के पूर्ण पालन के साथ मिठाइयों का आदान-प्रदान किया गया। इस कदम को दोनों देशों के बीच हाल ही में संघर्षविराम पर बनी सहमति के बाद विश्वास बहाली के उपायों के रूप में देखा जा रहा है। इस दौरान उन युवाओं का आदान-प्रदान भी हुआ, जो पिछले दो महीनों में तीन मौकों पर अनजाने में एक-दूसरे की सीमा को पार कर गए थे। सेना ने एक बयान में कहा कि दोनों पक्षों की ओर से सभी कोविड-19 प्रोटोकॉल को निभाने के साथ मिठाइयों का आदान-प्रदान किया गया।

चीन में भूकंप के झटके

बीजिंग।

दक्षिण-पश्चिम चीन के युन्नान प्रांत में गुरुवार को भूकंप के झटके महसूस किए गए। रिक्टर पैमाने पर भूकंप की तीव्रता 4.7 मापी गयी। चीन के भूकंप नेटवक केंद्र (सीईएनसी) ने आज यह जानकारी दी। केन्द्र के अनुसार बोशान शहर के शिडियन काउंटी में सुबह के समय भूकंप के झटके महसूस किए गए। भूकंप का केन्द्र जमीन की सतह से आठ किलोमीटर की गहराई में था। अभी तक भूकंप से किसी के हताहत होने की कोई रिपोर्ट नहीं है।

भारत मे अल्पसंख्यक मामलों पर चिंता जता रहा अमेरिका

न्यूयॉर्क।

अमेरिकी विदेश विभाग में धार्मिक स्वतंत्रता के मामले को देख रहे एक अधिकारी ने कहा कि अमेरिका नियमित रूप से भारतीय अधिकारियों के साथ अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा के मामले में चिंता जता रहा है और कहा कि भारतीय सरकार के पास सिविल सोसायटी समूहों की चिंताओं को दूर करने के अवसर हैं। बुधवार को अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता पर 2020 की रिपोर्ट के बारे में पत्रकारों को जानकारी देते हुए, डैनियल नडेल ने कहा, भारत के संबंध में, मुझे लगता है कि सरकार के लिए वहां कुछ वास्तविक चिंताओं को संबोधित करने का वास्तविक अवसर हैं , जिसके बारे में वे सिविल सोसायटी से बातचीत के माध्यम से सुनते हैं। हम भारत सरकार के अधिकारियों के साथ सभी स्तरों पर नियमित रूप से जुड़ते हैं, उन्हें भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों और सहिष्णुता के इतिहास की लंबी परंपरा को ध्यान में रखते हुए अल्पसंख्यकों के संरक्षण सहित मानव अधिकारों के दायित्वों और प्रतिबद्धताओं को बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि अधिकारियों के साथ चर्चा में सीएए (नागरिकता संशोधन अधिनियम) के बारे में मुस्लिम समुदाय की चिंताएं थीं। इसके साथ ही यह आरोप लगाया गया कि मुस्लिमों ने कोरोना वायरस फैलाया है। विदेश विभाग के अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता के कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी नडेल ने कहा कि अमेरिका भारत सरकार को धार्मिक समुदायों से संपर्क करने की सलाह देता है। साथ ही भारत को अलग-थलग पड़ने वाले कानूनों से दूर रहना चाहिए। जब कानून पारित किए जाते हैं, जब पहल की जाती है, जो इन समुदायों के साथ प्रभावी परामर्श के बिना किया जाता है, तो यह समय के साथ अलगाव की भावना पैदा करता है। और सबसे अच्छा तरीका है कि सरकार धार्मिक समुदाय के साथ सिविल सोसायटी के साथ प्रत्यक्ष संवाद में संलग्न हो। रिपोर्ट जारी करते हुए, राज्य सचिव एंटनी ब्लिंकन ने कहा, दुनिया के लिए हमारा वादा है कि बिडेन-हैरिस प्रशासन दुनिया भर में धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा और रक्षा करेगा। हम इस मुद्दे पर अमेरिका के लंबे समय तक नेतृत्व को बनाए रखेंगे। उन्होंने स्वीकार किया कि मुस्लिम विरोधी घृणा अभी भी कई देशों में व्यापक है, और यह अमेरिका के लिए भी एक गंभीर समस्या है। फरवरी 2020 में सीएए के खिलाफ जिन घटनाओं की सूची थी, उनमें यह कहा गया था कि प्रदर्शनकारियों पर जवाबी हमला करने के बाद नई दिल्ली में प्रदर्शन हिंसक हो गया।

अफगानिस्तान में 3 दिवसीय युद्ध विराम की घोषणा, लोग बिना भय के मना सकेंगे ईद

काबुल।

अफगानिस्तान में गुरुवार को तीन दिवसीय युद्ध विराम की शुरूआत हुई, क्योंकि लोग ईद-उल-फितर त्योहार के साथ रमजान के मुस्लिम पवित्र महीने के अंत का जश्न मना रहे हैं। डीपीए न्यूज एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, पिछले सप्ताह, तालिबान आतंकवादी समूह ने तीन दिन के राष्ट्रव्यापी संघर्ष विराम की घोषणा की थी। तालिबान की पेशकश के जवाब में, अफगानिस्तान के राष्ट्रपति अशरफ गनी ने भी सरकारी सुरक्षा बलों को युद्ध विराम का सम्मान करने का आदेश दिया है। सरकार ने पिछले अनुरोधों को दोहराते हुए तालिबान से स्थायी युद्ध विराम के लिए भी कहा। उत्तरी कुंडुज प्रांत के प्रांतीय पार्षद ने कहा कि स्थानीय लोग संघर्ष विराम के फैसले से खुश हैं, क्योंकि वे अब बिना किसी खतरे के ईद मना सकते हैं। वहीं दक्षिण पूर्वी प्रांत गजनी में भी लोगों में खुशी का माहौल बन गया, जब उन्हें पता चला कि वह त्योहार शांतिपूर्ण तरीके से मना सकते हैं। स्थानीय पार्षद हमीदुल्लाह नवाज ने कहा कि लोग प्रसन्न हैं, क्योंकि वे अब शांति से ईद मना पाएंगे। प्रांत में हाल के दिनों में सरकार और आतंकवादी ताकतों, विशेष रूप से तालिबान के बीच भारी लड़ाई देखी गई है। स्थानीय पार्षद मीर अहमद खान ने बताया कि दक्षिणी हेलमंद प्रांत जैसी जगहों पर भी लड़ाई की समस्याएं हैं, जहां ज्यादा झड़पें तो नहीं हुई हैं, लेकिन यहां पर मौजूद लोगों में से कई विस्थापित हुए हैं और कुछ लोग अपने प्रियजनों को खो चुके हैं या फिर परिवार के सदस्य घायल हुए हैं। यह पहली बार नहीं है जब तालिबान ने इस तरह के युद्धविराम की पेशकश की है। पहले तीन दिवसीय संघर्ष विराम की घोषणा जून 2018 में हुई थी। इससे पहले कई प्रांतों में तीव्र गोलीबारी की घटनाएं सामने आई थी। तालिबान ने हाल के दिनों में प्रांतीय राजधानियों, जिलों, ठिकानों और चौकियों पर हमले तेज किए हैं। अंतर्राष्ट्रीय सैनिक 1 मई को आधिकारिक रूप से हटने लगे और तभी से हमले भी तेज होने लगे। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, मई की शुरूआत में लगभग 10,000 अमेरिकी और नाटो सैनिक अभी भी देश में हैं। अब 11 सितंबर तक इनकी वापसी की तैयारी है। अमेरिकी सेना ने मंगलवार को कहा कि वह पूरी लगभग 6 से 12 प्रतिशत सैनिकों की वापसी सुनिश्चित कर चुके हैं।

भारत की चीन को 2 टूक: मालवाहक विमानों की आवाजाही करे बहाल, चिकित्सा आपूर्तियों की कीमतें बढ़ने से रोके

इंटरनेशनल डेस्क: कोरोना महामारी के संकट से जूझ रहे भारत ने देश में चीन को दो टूक शब्दों में कहा है कि मालवाहक विमान सेवाओं की सामान्य आवाजाही को जल्द बहाल करे। इसके अलावा भारत ने चीन को कोविड-19 की लहर से निपटने में लगे निजी भारतीय व्यापारियों द्वारा चीनी उत्पादकों से खरीदी जा रही आवश्यक चिकित्सा आपूर्तियों की कीमतों में तेज होती वृद्धि को रोकने में और सतत आपूर्ति श्रृंखला को बरकरार रखने के लिए कहा है। हांगकांग में भारत की महावाणिज्य दूत प्रियंका चौहान ने कहा कि ऑक्सीजन सांद्रकों जैसी चिकित्सीय आपूर्तियों की बढ़ती कीमतों और भारत आने वाले मालवाहक विमानों में व्यवधान से चिकित्सा सामग्रियों के आगमन की गति धीमी हो रही है। साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट के साथ एक साक्षात्कार में चौहान ने बुधवार को कहा आपूर्ति श्रृंखला खुली रहे और उत्पाद की कीमतें स्थिर रहें। उन्होंने कहा, भले ही आपूर्ति-मांग का थोड़ा बहुत दबाव है, लेकिन उत्पाद की कीमतों में कुछ स्थिरता और पूर्वानुमान तो होना चाहिए। चौहान ने कहा, और सरकारी स्तर का समर्थन एवं प्रयास का भाव भी दिखना चाहिए। मेरे पास इस बात की जानकारी नहीं है कि चीनी सरकार का इस मामले में कितना प्रभाव हो सकता है लेकिन अगर वे प्रभाव डाल सकते हैं, तो इसका स्वागत किया जाएगा। उनकी ये टिप्पणियां निजी भारतीय व्यापारियों द्वारा अत्यावश्यक चिकित्सीय आपूर्तियों खासकर ऑक्सीजन सांद्रकों के आयात के लिए की जा रही कोशिशों की पृष्ठभूमि में आई है ताकि अस्पतालों में हो रही कमी को दूर किया जा सके।

कोरोना के साए में दूसरे साल भी फीकी रही ईद, खूनी संघर्ष के बीच अल अक्सा मस्जिद में मना जश्न

इंटरनेशनल डेस्क: वैश्विक महामारी कोविड-19 के कारण मुस्लिम समुदाय के लोग बृहस्पतिवार को लगातार दूसरे वर्ष ईद-उल-फितर जोर शोर से नहीं मना सके। इजरायल और फिलीस्तीन के बीच चल रही जंग के के बावजूद इस्लाम के सबसे पवित्र दिनों में से एक ईद अल-फितर को मनाने के लिए हजारों फिलिस्तीनी गुरुवार को यरूशलेम में अल अक्सा मस्जिद परिसर में एकत्र हुए। गुरुवार को ईद पर भी इज़राइल ने गाजा के फिलिस्तीनी क्षेत्र में अपने हवाई हमले को जारी रखा । गुरुवार तड़के गाजा में 17 बच्चों और आठ महिलाओं सहित 69 लोगों की मौत हो गई और 390 से अधिक लोग घायल हुए हैं। सोशल मीडिया पर फोटो और वीडियोज में देखा जा सकता है कि टकरावों और हमलों के बावजूद ईद की नमाज अदा करने के लिए अल अक्सा मस्जिद में 100,000 लोग एकत्रित हुए। उधर दुनिया भर में कोरोना के खौफ चलते मस्जिदें बंद रहीं और इस उत्सव को मनाने के लिए परिवार के लोग एकजुट नहीं हो पाए। इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता में सड़कों पर लोग सामूहिक नमाज के लिए एकत्रित हुए, उन्होंने मास्क पहन रखे थे। कम जोखिम वाले इलाकों में मस्जिदों में नमाज की अनुमति दी गई लेकिन अधिक जोखिम वाले क्षेत्रों में मस्जिदें बंद रहीं। दक्षिणपूर्वी एशिया की सबसे बड़ी मस्जिद, जकार्ता स्थित इस्तिकला ग्रांड मस्जिद भी ईद पर बंद रही। इंडोनेशिया तथा मलेशिया में ईद पर लगातार दूसरे साल लोगों को अपने संबंधियों के घर जाने के लिए यात्रा करने की इजाजत नहीं थी। इंडोनेशिया के राष्ट्रपति जोको विडोडो ने टेलीविजन पर संबोधन में कहा, ''ऐसे समय पर हमें अपने रिश्तेदारों की कमी खलती है, खासकर ईद के मौके पर। लेकिन अपने घरों को नहीं जाकर और एकजुट होकर हमें सुरक्षा को प्राथमिकता देनी होगी।' पिछले वर्ष भी ईद के मौके पर इसी तरह की पाबंदियां थीं बावजूद इसके ईद की छुट्टी के तीन हफ्ते बाद इंडोनेशिया में संक्रमण के दैनिक मामले 37 फीसदी तक बढ़ गए थे। जकार्ता के गर्वनर ने मॉल, रेस्त्रां आदि को बंद करने के आदेश दिए हैं। स्वास्थ्य मंत्री बुडी गुनाडी सादिकीन ने चिंता जताई है कि यात्रा पर प्रतिबंध के बावजूद लोग आना जाना करेंगे और वायरस के मामले बढ़ सकते हैं।

बाज नहीं आ रहा चीनः ताइवान रक्षा क्षेत्र में फिर भेजा युद्धक विमान, 12 दिन में 7वीं बार की घुसपैठ

ताइपे। चीन अपने सभी पड़ोसी देशों के लिए खतरा बना हुआ है। इस बीच मेरिका की ताइवान से बढ़ती दोस्ती चीन को रास नहीं आ रही है। अमेरिका से निकटता के बाद चीन की ताइवान के खिलाफ कार्रवाईयां बढ़ गई हैं जिसके चलते दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ता जा रहा है। हालात इस कद्र बिगड़ चुके हैं कि चीन बार-बार ताइवान के रक्षा क्षेत्रों में घुसपैठ कर उसे उकसा रहा है। ताइवान स्ट्रेट में तनाव बढ़ने के बीच एक और घटना में मंगलवार को एक चीनी सैन्य विमान ताइवान के वायु रक्षा पहचान क्षेत्र में प्रवेश कर गया। ताइवान के राष्ट्रीय रक्षा मंत्रालय के अनुसार सिंगल पीपुल्स लिबरेशन आर्मी एयर फोर्स (PLAAF) शानक्सी Y-8 इलेक्ट्रॉनिक युद्धक विमान ने ताइवान के ADIZ के दक्षिण-पश्चिम कोने में उड़ान भरी। जवाब में, ताइवान ने लड़ाकू विमानों को रवाना किया, रेडियो चेतावनी जारी की, और पीएलएएएफ विमानों को ट्रैक करने के लिए वायु रक्षा मिसाइल प्रणालियों को तैनात किया। वायु रक्षा पहचान क्षेत्र प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली हैं जो देशों को उनके हवाई क्षेत्र में घुसपैठ का पता लगाने में मदद करती हैं। ताइवान समाचार के अनुसार इस मई महीने में बीजिंग ने 2, 4, 6, 7, 8, और 11 मई को ताइवान के रक्षा क्षेत्र में घुसपैठ कर चुका है । मीडिया रिपोर्ट के अनुसार साल के मध्य सितंबर के बाद से बीजिंग ने ताइवान के ADIZ में नियमित रूप से विमानों को भेजकर अपने ग्रे-जोन रणनीति को आगे बढ़ाया है ।पिछले कुछ महीनों में ताइवान ने चीनी युद्धक विमानों द्वारा लगभग रोजाना ADIZ में घुसपैठ की सूचना दी है।

अंतर्राष्ट्रीय जनमत संरचना में चीन बनाए एक स्थान

बीजिंग।

चीनी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता छुनयिंग ने 11 मई को संबंधित सवाल के जवाब में बताया कि मीडिया क्षेत्र में केवल सीएनएन और बीबीसी नहीं होने चाहिए। हर देश की अपनी आवाज होनी चाहिए। चीन को अंतर्राष्ट्रीय जनमत संरचना में अपनी जगह बनानी चाहिए। हाल ही में न्यूयॉर्क टाइम्स की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि बीबीसी, सीएनएन और अन्य मीडिया के नेतृत्व वाले वैश्विक मीडिया परिदृश्य का सामना करते हुए, चीन वैश्विक समाचार मीडिया के लिए एक विकल्प तैयार कर रहा है। इस रिपोर्ट ने चीन स्थित विदेशी पत्रकारों पर हमला करने का भी आरोप लगाया। इस पर छुनयिंग ने कहा कि दुनिया स्वाभाविक रूप से समृद्ध और विविध है। मीडिया क्षेत्र में केवल सीएनएन और बीबीसी नहीं होने चाहिए। हर देश की अपनी आवाज होनी चाहिए। दुनिया के दूसरे सबसे बड़े आर्थिक समुदाय और सबसे बड़े विकासशील देश के रूप में चीन को निश्चित रूप से और अंतर्राष्ट्रीय जनमत संरचना में अपनी जगह बनानी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिकी जनमत और प्रवचन के आधिपत्य, चीन के खिलाफ झूठ और अफवाहों का सामना करते हुए चीन को निश्चित रूप से अपनी आवाज बनाने की जरूरत है। चीन को कोविड-19 महामारी समेत प्रमुख मुद्दों पर सच्चाई समझाने की भी आवश्यकता है। छुनयिंग ने कहा कि चीनी मीडिया निष्पक्षता और सच्चाई के सिद्धांतों के आधार पर समाचार रिपोर्टों का संचालन करता है, अन्य देशों में निर्देशित झूठी जानकारी नहीं फैलाता है।

अमेरिका की यथार्थ कार्रवाई देखना चाहती है दुनिया

बीजिंग।

हाल में अमेरिकी वाशिंगटन पोस्ट ने लेख जारी कर अमेरिकी सरकार द्वारा महामारी-रोधी वैक्सीन को बौद्धिक संपदा बंधन से मुक्त कराने की कार्रवाई हालिया महामारी का मुकाबला करने के लिए कारगर प्रस्ताव नहीं है, लेकिन देखने में यह तुरंत लोगों और मतदाताओं का ध्यान खींच सकता है। इस प्रस्ताव का पालन करने के लिए डब्ल्यूटीओ के 164 सदस्य देशों को दस्तावेज पर आधारित वार्ता पर सहमति प्राप्त करने की आवश्यकता है, जो बहुत जटिल होगी। हाल में अमेरिका ने भी स्वीकार किया कि वार्ता करने के लिए समय लगेगा। यह वार्ता बहुत लंबी हो सकेगी। क्या यह लंबी वार्ता फौरी महामारी रोकथाम की समस्या का हल करेगी? या अमेरिकी सरकार शुरू से ही इसका कार्यान्वयन नहीं करना चाहती थी, जबकि सिर्फ राजनीतिक मकसद से यह बात कही। हाल में संपन्न यूरोपीय आयोग के सोशल समित में यूरोपीय संघ के विभिन्न देशों के नेताओं ने महामारी-रोधी वैक्सीन को बौद्धिक संपदा बंधन से मुक्त कराने को स्थगित करने पर सहमति प्राप्त की। यूरोपीय आयोग की अध्यक्षा उर्सुला वॉन डेर लेयेन ने कहा कि अब विश्व के लिए फौरी काम है। वैक्सीन की पर्याप्त सप्लाई और निष्पक्ष वितरण को सुनिश्चित करना है, जबकि बौद्धिक संपदा बंधन से मुक्त कराने की बात नहीं है। अमेरिका की यथार्थ कार्रवाई को देखें। अमेरिका द्वारा उत्पादित वैक्सीन शत प्रतिशत अमेरिकियों के लिए हैं, जबकि बहुत कम वैक्सीन मैक्सिको और कनाडा निर्यात की गई हैं। साथ ही अमेरिका ने वैक्सीन के उत्पादन के लिए कच्ची सामग्रियों के निर्यात पर भी पाबंदी लगाई, जिसने वैश्विक सहयोग में बड़ी बाधा डाली है। बेकार बातें करने से विश्व को यथार्थ कार्रवाई की आवश्यकता है। हाल में कई देशों की महामारी अति गंभीर स्थिति में है। इसी वक्त हम अमेरिका की यथार्थ कार्रवाई देखना चाहते हैं। विश्व के लोग यह चाहते हैं कि अमेरिका वैक्सीन के निर्यात पर पाबंदी हटाकर संकट में फंसे देशों और लोगों को मदद देगा।

क्रांति समय

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

दिल्ली सहित देशभर में कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर अब कमजोर पड़ने लगी है

दिल्ली में नए केसों से ज्यादा रिकवरी, यूपी में 1 लाख घटे एक्टिव केस

नई दिल्ली (एजेंसी) ।

दिल्ली सहित देशभर में कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर अब कमजोर पड़ने लगी है। बीते कुछ दिनों में तेजी से इसके मामलों में कमी देखी जा रही है। दिल्ली में गुरुवार को नए संक्रमितों की संख्या घटकर 10 हजार आ गई है। अब संक्रमण दर 14.24 प्रतिशत पर है, जो बुधवार को 17.03 थी। वहीं, दिल्ली के पड़ोसी राज्य उत्तर प्रदेश की स्थिति में भी सुधार आ रहा है। 30 अप्रैल को जहां यूपी में एक्टिव मामलों की संख्या 3,10,783 थी। वहीं आज एक्टिव मामले घटकर 2,04,658 हो गए हैं। दिल्ली स्वास्थ्य विभाग की ओर से गुरुवार को जारी हेल्थ बुलेटिन के अनुसार, बीते 24 घंटे में जहां कोरोना के 10,489 नए मरीज मिले हैं, वहीं 308 मरीजों को अपनी जान गंवानी पड़ी है। बुधवार को 13,287 मरीजों में संक्रमण की पुष्टि हुई थी। आज 15,189 मरीज पूरी तरह ठीक होकर कोरोना मुक्त हो गए, जबकि बुधवार को यह संख्या 14,071 थी। स्वास्थ्य विभाग ने कहा कि दिल्ली में अब तक संक्रमितों की कुल संख्या 13,72,475 हो गई है और 48,340 मरीज होम आइसोलेशन में हैं। राजधानी में अब कोरोना वायरस संक्रमण के एक्टिव केस 77,717 हैं। इसके साथ ही, अब तक कुल 12,74,140 मरीज इस महामारी को मात देकर ठीक भी हो चुके हैं। वहीं अब तक मरने वालों की संख्या 20,618 हो गई है। बीते 24 घंटे में दिल्ली में कुल 73,675 टेस्ट किए गए हैं। इनमें से 58,709 आरटीपीआर/ सीबीएनएएटी / ट्रूनैट टेस्ट और 14,966 रैपिड एंटीजन टेस्ट शामिल थे। दिल्ली में अब तक कुल 18,101,281 जांचें हुई हैं और प्रति 10 लाख लोगों पर 9,52,699 टेस्ट किए हैं। साथ ही अब दिल्ली में कंटेनमेंट जोन की संख्या बढ़कर 57,550 पर पहुंच गई है।

कोविशील्ड की दो डोज के बीच बढ़ा समय, 12 से 16 हफ्ते के बीच लगेगी वैक्सीन

नई दिल्ली (एजेंसी) ।

कोरोना वैक्सीन की कमी के बीच टीकाकरण पर बनी राष्ट्रीय तकनीकी सलाहाकर समूह (एनटीएजीआई) ने कई सिफारिशें की हैं। एनटीएजीआई का कहना है, कि कोविशील्ड की दो खुराक के बीच के अंतर को बढ़ाकर 12-16 सप्ताह करे, और कोरोना पॉजिटिव लोगों को रिकवरी के 6 माह बाद वैक्सीन लगे, इन बातों को केन्द्र सरकार ने स्वीकार कर लिया है। अभी कोविशील्ड वैक्सीन की दो खुराक के बीच गैप 6-8 हफ्ते से बढ़ाकर 12-16 हफ्ते कर दिया है। अभी तक कोविशील्ड वैक्सीन की दो खुराकों के बीच का अंतराल चार से आठ हफ्ते था। एनटीएजीआई ने सुझाव दिया है कि गर्भवती महिलाओं को किसी भी कोरोना वैक्सीन लेने का विकल्प दिया जा सकता है और स्तनपान कराने वाली महिलाओं को प्रसव के बाद किसी भी समय टीका लगाया जा सकता है।एनटीएजीआई ने कहा है कि संक्रमितों को रिकवरी के छह महीने बाद तक कोरोना वैक्सीनेशन नहीं करना चाहिए। एनटीएजीआई की सिफारिश से पहले डॉक्टरों ने कोरोना संक्रमितों को रिकवरी के तीन महीने बाद वैक्सीन लगवाने का सुझाव दिया है। सीडीसी यूएस की गाइडलाइन में भी कोरोना से रिकवरी के 90 दिन के बाद वैक्सीन लगवाने की सलाह दी गई है, जिसमें अभी कोई बदलाव नहीं किया गया है। मालूम हो कि एनटीएजीआई ने कोविशील्ड की दो खुराक के बीच 12 से 16 सप्ताह के गैप की सिफारिश भी की थी। अभी कोविशील्ड की दो खुराकों के बीच का अंतराल चार से आठ सप्ताह है। एनटीएजीआई की सिफारिशों को राष्ट्रीय विशेषज्ञ समूह के पास भेजा गया। जिसके बाद कोविशील्ड वैक्सीन की दो खुराक के बीच गैप 6-8 हफ्ते से बढ़ाकर 12-16 हफ्ते कर दिया गया।

दिल्ली के हिस्से की सरप्लस ऑक्सीजन ज़रूरतमंद राज्यों को दे केंद्र सरकार: सिसोदिया

नई दिल्ली। दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने बताया कि तत्काल में केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित प्रति बेड ऑक्सीजन की कुल मांग के अनुसार अब दिल्ली को रोज 582 मीट्रिक टन ऑक्सीजन की ज़रूरत है। उपमुख्यमंत्री ने केंद्र सरकार और सुप्रीम कोर्ट का धन्यवाद देते हुए कहा कि मुश्किल के समय में सुप्रीम कोर्ट के सहयोग से केंद्र सरकार द्वारा मांग के अनुसार 700 टन नहीं लेकिन पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन की आपूर्ति की गई जिससे हज़ारों लोगों की जान बची। उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने ये जानकारी भी दी का अब अस्पतालों से आपात स्थिति में स्ह्स कॉल आना भी बंद हो चुकी है। अब 24 घंटों में बमुश्किल 1-2 कॉल आती है जहां तुरंत ऑक्सीजन पहुंचा दी जाती है। इसलिए दिल्ली सरकार ने एक जिम्मेदार सरकार का कर्तव्य निभाते हुए केंद्र सरकार को चिट्ठी लिख कर दिल्ली का ऑक्सीजन आपूर्ति का कोटा घटाकर प्रतिदिन केवल 582 मीट्रिक टन ऑक्सीजन देने की मांग की है ताकि शेष ऑक्सीजन को बाकी ज़रूरतमंद राज्यों को दिया जा सके।

कोरोना के कारण आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में विधान परिषद चुनाव टला

नई दिल्ली (एजेंसी)।

कोरोना महामारी की दूसरी लहर के बीच बंगाल सहित चार राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश में विधानसभा चुनाव कराए जाने को लेकर आलोचना के बाद अब चुनाव आयोग ने आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में विधान परिषदों के लिए होने वाले द्विवार्षिकी चुनावों को टाल दिया है। चुनाव आयोग ने कहा है कि, चुनाव आयोग ने इस मामले की समीक्षा की और निर्णय लिया कि कोविड़-19 की दूसरी लहर के कारण, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के विधान परिषदों के लिए द्विवार्षिक चुनाव कराना तब तक ठीक नहीं होगा, जब तक स्थिति में सुधार नहीं होता और माहौल चुनावों के अनुकूल नहीं हो जाता। आंध्र प्रदेश विधान परिषद के तीन और तेलंगाना विधान परिषद के 6 सदस्यों का कार्यकाल क्रमशः 31 मई 2021 और 3 जून 2021 को खत्म हो रहा है। इन सीटों के लिए चुनाव कराने पर अब आयोग संबंधित राज्यों से इनपुट मिलने के बाद भविष्य में स्थिति के हिसाब से करेगा। हालांकि, इसके लिए कोई समय सीमा तय नहीं की गई है।

कर्नाटक कांग्रेस की मांग, जिनकी आजीविका गई, उनके लिए वित्तीय पैकेज घोषित किया जाएं

बेंगलुरु। कर्नाटक कांग्रेस ने गुरुवार को राज्य की भाजपा सरकार से उन लोगों के लिए वित्तीय पैकेज घोषित करने की मांग की हैं, जिनकी आजीविका कोविड-19 के मद्देनजर लागू लॉकडाउन से प्रभावित हुई है। कर्नाटक में प्रमुख विपक्षी दल ने मांग की कि केंद्र को टीकाकरण का पूरा खर्च वहन करना चाहिए और राज्य सरकार को इस संबंध में दबाव बनाना होगा। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डीके शिवकुमार ने कहा, ''हमारी मांग है कि हर परिवार (गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले) को 10,000 रुपये दिए जाएं, उर्वरक की कीमत कम की जाए, सब्जी और फूल उगाने वाले किसानों को मुआवजा दे, जिन्हें नुकसान हुआ है। उन कलाकारों एवं अन्य को वित्तीय पैकेज दिया जाना चाहिए जो लॉकडाउन से प्रभावित हुए हैं।उन्होंने कहा कि एक वित्तीय पैकेज दिया जाना चाहिए, बैंकरों की बैठक बुलाई जानी चाहिए और ब्याज माफ किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, ''अगर ऐसा नहीं किया जाता,तब आत्महत्याएं बढ़ेंगी और वे (सरकार) इसके लिए जिम्मेदार होगी---- अस्पताल के बिल माफ किए जाएं।'' राज्य में कोविड-19 बढ़ते मामलों के बीच कर्नाटक सरकार ने 10 से 24 मई तक राज्य में पूर्ण लॉकडाउन लगा दिया है। केंद्र सरकार को टीके का पूरा खर्च वहन करना चाहिए, यह नीति पूरी दुनिया में है।'' उन्होंने पोलियो टीकाकरण का उदाहरण देकर कहा, केंद्र को टीकाकरण की जिम्मेदारी लेनी है, न कि राज्य को... मुझे नहीं पता कि वे इसे राज्य पर क्यों थोप रहे हैं? इनमें से किसी में भी (राज्य सरकार में) बोलने का साहस नहीं है। भाजपा के पच्चीस सांसद राज्य से हैं, भगवान उन्हें बचाएं, क्या वे लोगों की खातिर अपनी आवाज उठा रहे हैं?'' राज्य सरकार द्वारा टीकाकरण अभियान के संचालन को लेकर निशाना साधकर कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस प्रमुख ने कहा कि राज्य सरकार सभी स्तरों पर पूरी तरह से विफल रही है।

देश में 2 से 18 साल वालों को भी जल्द मिलेगी वैक्सीन, डीसीजीआई ने कोवैक्सीन के ट्रायल की मंजूरी दी

नई दिल्ली (एजेंसी)।

भारत में अब कोरोना की तीसरे लहर से बच्चों को बचाने की तैयारी शुरू हो गई है। कोरोना कहर के बीच ऐसा कहा जा रहा है कि इसकी तीसरी लहर में सबसे अधिक बच्चे प्रभावित होंगे। यह चिंता इसलिए भी बढ़ जाती है, क्योंकि बच्चों के लिए देश में अबतक एक भी वैक्सीन नहीं है। मगर अब राहत की खबर है कि भारत में जल्द ही बच्चों के लिए वैक्सीन मिल जाएगी, क्योंकि इसके वैक्सीन के ट्रायल की मंजूरी मिल गई है। ड्रग कंट्रोलर जेनलर ऑफ इंडिया ने गुरुवार को भारत बायोटेक को 2 से 18 साल की उम्र के बच्चों को वैक्सीन देने के लिए कोवैक्सीन के दूसरे और तीसरे फेज के लिए ट्रायल की मंजूरी दे दी। विशेषज्ञ समिति ने मंगलवार को ही 2-18 आयुवर्ग के लिए भारत बायोटेक के कोविड-19 टीके कोवैक्सीन के दूसरे/तीसरे चरण के लिए क्लीनिकल टेस्ट की सिफारिश की थी। बताया जा रहा है कि यह परीक्षण दिल्ली एवं पटना के एम्स और नागपुर स्थित मेडिट्रिना चिकित्सा विज्ञान संस्थान समेत विभिन्न स्थानों पर किया जाएगा। भारत बायोटेक 525 स्वस्थ वॉलंटियर्स के साथ यह परीक्षण करेगा। केन्द्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) की कोविड-19 विषय विशेषज्ञ समिति ने मंगलवार को भारत बायोटेक द्वारा किए गए उस आवेदन पर विचार-विमर्श किया जिसमें उसके कोवैक्सीन टीके की दो साल से 18 साल के बच्चों में सुरक्षा और रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने समेत अन्य चीजों का आकलन करने के लिए परीक्षण के दूसरे/तीसरे चरण की अनुमति देने का अनुरोध किया था। कंपनी के आवेदन पर विस्तृत विचार-विमर्श के बाद समिति ने प्रस्तावित दूसरे/तीसरे चरण के परीक्षण की अनुमति दिए जाने की सिफारिश की।

कोविशील्ड की दूसरी डोज के लिए करें 3 महीने इंतजार, कोरोना है तो 6 माह बाद लें डोजः सरकारी पैनल

नई दिल्ली (एजेंसी)।

देश में कोरोना का कहर और वैक्सीन की किल्लत के बीच सरकारी समूह एनटीएजीआई ने कोविशील्ड टीके की दो खुराकों के बीच अंतर बढ़ाकर 12-16 हफ्ते करने की सिफारिश की है। मौजूदा प्रोटोकॉल के तहत कोविशील्ड की दो डोज के बीच छह से 8 सप्ताह का अंतर रखना होता है। पैनल ने कोविड टीकाकरण से पहले टीका लगवाने आए लोगों की रैपिड एंटीजन जांच करवाने का प्रस्ताव ठुकरा दिया है। राष्ट्रीय टीकाकरण तकनीकी सलाहकार समूह (एनटीएजीआई) ने कोवैक्सिन की खुराकों के बीच अंतराल में किसी तरह के बदलाव की सिफारिश नहीं की है। अभी यह अंतराल 4 से 8 हफ्ते हैं। एनटीएजीआई ने कहा कि जो लोग कोविड-19 से पीड़ित रह चुके हैं उन लोगों को स्वस्थ होने के बाद छह महीने तक टीकाकरण नहीं करवाना चाहिए। गर्भवती महिलाओं को कोविड-19 का कोई भी टीका लगवाने का विकल्प दिया जा सकता है और स्तनपान करवाने वाली महिलाएं बच्चे को जन्म देने के बाद किसी भी समय टीका लगवा सकती हैं। एनटीएजीआई के ये सुझाव मंजूरी के लिए टीकाकरण को देखने वाले कोविड-19 के राष्ट्रीय विशेषज्ञ समूह को भेजे जाएंगे। मौजूदा साक्ष्यों, खासकर ब्रिटेन से मिले साक्ष्यों के आधार पर कोविड-19 कामकाजी समूह कोविशील्ड टीके की दो खुराकों के बीच अंतराल को बढ़ाकर 12 से 16 हफ्ते करने पर सहमत हुआ है। वर्तमान के टीकाकरण प्रोटोकॉल में कहा गया है कि चूंकि अभी तक के क्लिनिकल ट्रायल में गर्भवती और स्तनपान करवाने वाली महिलाओं को शामिल नहीं किया है, इसलिए उन्हें टीका नहीं लगाया जाना चाहिए। ऐसे लोग जिन्हें टीके की पहली खुराक लग चुकी है और दूसरी खुराक लगने से पहले यदि वे संक्रमित हो जाते हैं तो उन्हें ठीक होने के बाद अगली खुराक लगवाने से पहले चार से आठ हफ्ते इंतजार करना चाहिए।

जुलाई से देश में ही होगा इसका उत्पादन

अच्छी खबरः अगले सप्ताह से भारतीय बाजार में मिलेगी रुसी कोरोना वैक्सीन स्पुतनिक

नई दिल्ली (एजेंसी)।

देश में जारी कोरोना संकट के बीच केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने प्रेसवार्ता की। इस कॉन्फ्रेंस में मंत्रालय के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल, डॉ.बलराम भार्गव, आईसीएमआर और नीति आयोग के सदस्य डॉ.वीके पॉल मौजूद रहे। इस मौके पर लव अग्रवाल ने बताया कि देश के 187 जिलों में पिछले 2 हफ्तों से कोरोना मामलों में गिरावट जारी है। 24 राज्य में पॉजिटिविटी रेट 15 फीसदी तक है, जबकि 12 राज्य हैं, जहां एक लाख से अधिक कोरोना के केस हैं। संयुक्त सचिव ने बताया कि अब धीरे-धीरे फिर से रिकवरी रेट बढ़ रहा है। मौजूद समय में रिकवरी रेट 83.26 प्रतिशत है। अब केस भी घट रहे हैं। उन्होंने कहा कि टेस्टिंग भी अब सबसे अधिक हो रही है। अग्रवाल ने बताया कि बिहार में सक्रिय केस एक लाख से नीचे आ गए हैं। 16 राज्य हैं, जहां सक्रिय केस 50 हजार से कम हैं। राजस्थान, बिहार, छत्तीसगढ़, यूपी, दिल्ली में अब नए केस कम आने शुरू हो गए हैं। देश में 24 राज्य शासित प्रदेश हैं, जहां 15 प्रतिशत से ज्यादा पॉजिटिविटी रेट है। 5-15 प्रतिशत पॉजिटिविटी रेट 8 राज्यों में है। 5 प्रतिशत से कम पॉजिटिविटी रेट 4 राज्यों में है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने जानकारी देकर बताया कि देश में 12 राज्य हैं, जहां एक लाख से भी ज्यादा सक्रिय मामले हैं।8 राज्यों में 50,000 से एक लाख के बीच सक्रिय मामलों की संख्या बनी हुई है। 16 राज्य हैं,जहां 50,000 से भी कम सक्रिय मामलों की संख्या बनी हुई है। स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव ने बताया कि देश में अब तक 83.26 प्रतिशत मामले ठीक हुए हैं। देश में करीब 37.1 लाख सक्रिय मामलों की संख्या बनी हुई है। 3 मई को रिकवरी रेट 81.3 प्रतिशत थी जिसके बाद रिकवरी में सुधार हुआ है। पिछले 24 घंटों में देश में 3,62,727 मामले दर्ज हैं। इस मौके पर लव अग्रवाल ने बताया कि वैक्सीनेशन के बारे में बताया गया कि अबतक 17.72 करोड़ लोगों को डोज दी जा चुकी है। जिसमें 13.76 करोड़ फर्स्ट डोज, 3.96 करोड़ सेकेंड डोज है।डॉ वीके पॉल ने कहा कि भारत में रूसी कोविंड -19 वैक्सीन स्पुतनिक आ चुकी है। इसकी बिक्री अगले हफ्ते से शुरू हो जाएगी। 2 बिलियन डोज भारत में अगले पांच महीनों में उपलब्ध होगी। देसी और विदेशी वैक्सीन दोनों भारत में लगने लगेगी। स्पुतनिक अक्टूबर तक भारत में उत्पादित होकर मिलने लगेगी।

संक्षिप्त समाचार

दिल्ली में संक्रमण की दर घटकर हुई 14%, पिछले 24 घंटो में आए 10400 मामले

नई दिल्ली। दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने गुरुवार को केंद्र सरकार को पत्र लिखकर दिल्ली में कोरोना संक्रमण दर के कम होने और अस्पतालों में मरीजों की संख्या कम होने पर दिल्ली के ऑक्सीजन कोटे को कम करने की मांग करते हुए एक ज़िम्मेदार सरकार की शानदार भूमिका का उदाहरण दिया। मनीष सिसोदिया ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से जानकारी दी कि, दिल्ली में अप्रैल के चौथे और मई के पहले सप्ताह में कोरोना संक्रमण की दर तेज़ी से बढ़ी थी। प्रतिदिन 80 हज़ार से एक लाख तक टेस्ट किए जाते थे और रोज़ 27-28 हज़ार नए कोरोना मामले सामने आते थे संक्रमण की दर 32% तक पहुंच गई थी। लेकिन अब दिल्ली में मरीजों की संख्या घट रही है संक्रमण दर अब 14% है और पिछले 24 घंटो में केवल 10400 मामले सामने आए है। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि जब दिल्ली में कोरोना का संक्रमण बढ़ा तो ऑक्सीजन की मांग भी बढ़ी तब दिल्ली को प्रतिदिन 700 मीट्रिक टन ऑक्सीजन की ज़रूरत थी। लेकिन संक्रमण दर के कम होने और अस्पतालों में मरीजों की संख्या कम होने के बाद दिल्ली में अब ऑक्सीजन की मांग भी घट गई है।

दिल्ली-यूपी, हरियाणा सरकार को सुप्रीम कोर्ट का आदेश, प्रवासी मजदूरों के लिए खोलें सामुदायिक रसोई

नई दिल्ली। कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों पार काबू पाने के लिए राज्यों की ओर से लगाया गया लॉकडाउन प्रवासी मजदूरों के लिए किसी दोहरी मुसीबत से कम नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को प्रवासी मजदूरों परेशानी को देखते हुए दिल्ली, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में (एनसीआर में आने वाले जिलों) सामुदायिक रसोई खोलने का आदेश दिया है ताकि वे उनके परिवार के सदस्यों जो फंसे हुए हैं उन्हें दो वक्त की रोटी मिल सके। सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली, यूपी और हरियाणा की सरकारों को आदेश दिया है कि वो मई से एनसीआर में आत्मनिर्भर भारत स्कीम या फिर किसी दूसरी योजना के तहत प्रवासी मजदूरो को सूखा राशन मुहैया कराने के लिए योजना बनाए। इसके साथ-साथ कोर्ट ने यह भी कहा कि सूखा राशन लेने के लिए अधिकारियों की ओर से पहचान पत्र पर जोर नहीं दिया जाना चाहिए।

- मिले परिवहन की व्यवस्था

सुप्रीम कोर्ट ने राज्यों को निर्देश दिया कि एनसीआर में फंसे प्रवासी मजदूर अगर अपने घर जाना चाहते हैं तो उनको भेजने के लिए परिवहन की पर्याप्त व्यवस्था की जाए। कोरोना वायरस महामारी की वजह से दिल्ली-एनसीआर में काफी संख्या में प्रवासी मजदूर फंसे हुए हैं। देश में गुरुवार को कोविड-19 के 3,62,727 नए मामले सामने आने के बाद संक्रमण के कुल मामले 2,37,03,665 हो गए हैं जबकि कोरोना वायरस संक्रमण से 4,120 लोगों की मौत होने के बाद मृतक संख्या 2,58,317 पर पहुंच गई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के बृहस्पतिवार सुबह आठ बजे तक के आंकड़ों के मुताबिक 37,10,525 मरीजों का अब भी इलाज चल रहा है जो कुल मामलों का 15.65 प्रतिशत है।

दिल्ली हाईकोर्ट ने कहा, किसी को बंदूक के बगैर जंग लड़ने नहीं भेज सकते

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने गुरुवार को केंद्र और दिल्ली सरकार से पूछा कि जेलों में भीड़भाड़ कम करने के सुप्रीम कोर्ट के आदेश को लागू करवाने के लिए काम कर रहे विधिक सहायता वकील एवं न्यायिक अधिकारी जो 18 से 44 वर्ष आयुवर्ग में आते हैं, क्या वे जिला अदालतों में लगाए गए केंद्रों पर टीका लगवाने सीधे आ सकते हैं। दिल्ली हाईकोर्ट ने कहा कि आप किसी को बिना बंदूक के युद्ध में नहीं भेज सकते। हाईकोर्ट ने दिल्ली राज्य कानूनी सेवा प्राधिकरण (डीएसएलएसए) की याचिका पर सुनवाई के वक्त यह टिप्पणी की। जस्टिस नवीन चावला ने कहा कि कानूनी सहायता वकील और न्यायिक अधिकारी सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों को लागू करने के लिए काम कर रहे हैं और इन लोगों का कोविड-19 महामारी से बचाव करने की जरूरत है। डीएसएलएसए की ओर से वकील अजय वर्मा ने हाईकोर्ट से अनुरोध किया है कि केंद्र तथा दिल्ली सरकार को न्यायिक अधिकारियों एवं कानूनी सहायता वकीलों का जिला अदालतों में बनाए गए टीकाकरण केंद्रों पर तत्काल टीकाकरण करने का निर्देश दिया जाए। केंद्र सरकार ने बेंच को सूचित किया कि वर्तमान में वकीलों को टीकाकरण में प्राथमिकता देने के लिए फ्रंटलाइन वर्कर्स के तौर पर उनके लिए अलग से कोई कैटेगिरी नहीं है। केंद्र ने कहा कि कानूनी सहायता वकीलों के टीकाकरण का मुद्दा देशभर में चिंता का विषय बना हुआ है। अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल चेतन शर्मा ने हाईकोर्ट को यह भी बताया कि टीकाकरण की पहली और दूसरी डोज के बीच एक महीने से अधिक का अंतर है और इस अवधि में कानूनी सहायता वकीलों का कोविड-19 के खतरे से सामना हो सकता है। हाईकोर्ट ने कहा कि चेतन शर्मा की बात सही है और यदि इन वकीलों को प्राथमिकता के आधार पर टीके की पहली डोज मिल जाती है तो इससे उन्हें कुछ तसल्ली तो मिलेगी। कोर्ट ने कहा कि हम जो भी दे सकते हैं, कम से कम वह तो हमें उन्हें देना चाहिए। दिल्ली सरकार के स्थायी वकील संतोष के. त्रिपाठी ने हाईकोर्ट से कहा कि 45 वर्ष या अधिक आयु के वकील एवं न्यायिक अधिकारी जिला अदालतों में बने टीकाकरण केंद्रों पर सीधे जा सकते हैं, यह व्यवस्था 18 से 44 वर्ष आयुवर्ग के वकीलों और न्यायिक अधिकारियों के लिए नहीं है। उन्होंने कहा कि 18 से 44 वर्ष आयुवर्ग के लोगों को टीकाकरण के लिए सीधे पहुंचने की अनुमति देने का दिल्ली सरकार को अधिकार नहीं है, इस बाबत फैसला केंद्र को लेना है।

स्वामी, मुद्रक व् प्रकाशक : सुरेश मौया द्वारा अष्ट विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर, सिद्धिविनायक मंदीर के पास , (भाटेना) हो.सो अंजना सुरत
गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक :सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/751000 (Subject to Surat jurisdiction)